चन्दामामा
दिसम्बर १९६७
75 P

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS 26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

चाँद उगा है, फूल खिला है
कदम गाछ तर कौन ?
नाच रहे हैं हाथी-घोड़े
ब्याह करेगा कौन ?

ताँती के घर बेंग बसा है
ढोंसा को है तोन्द !
खाता-पीता मौज उड़ाता
गाना गाता कौन ?

हँसी के इस फुहारे को छोड़ते ही करोड़ों-करोड़ शिशुओं के खिलखिलाते प्रफुल्लित चेहरे नजर के सामने उभर आते हैं।

प्रगतिशील भारत में शिशुओं के स्वास्थ्य को आकर्षक बनाये रखने के लिये 'डाबर' ने तरह-तरह के प्रयोग एवं परीक्षण के बाद—'डाबर जन्म-घूँटी' का निर्माण किया है।

शिशुओं के सभी प्रकार के रोगों में व्यवहार की जाती है।

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) प्रा. लि., कलकत्ता-२६

दिसम्बर १९६७

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००

शक्ति और उत्साह के लिये!
दूध
कोको
शक्कर
माल्ट
Cadbury's
Bournvita
THE IDEAL FOOD DRINK FOR STRENGTH AND VIGOUR
कॅडबरिज़
बोर्नविटा
बोर्नविटा में कई पौष्टिक पदार्थ सम्मिश्रित हैं। इससे मांसपेशियों और स्नायुतन्तुओं के विकास के लिये प्रोटीन मिलता है, शक्ति और उत्साह के लिये कार्बोहाईड्रेट, हड्डियों को मज़बूत रखने के लिये खनिजलवण और स्वास्थ्य के लिये आवश्यक विटामिन मिलते हैं। आसानी से बनाया जा सकने वाला बोर्नविटा स्वादिष्ट भी होता है।

रंगलोक
नूतन
उस महान् प्रेम की कहानी जो सिर्फ नारी ही दे सकती है!
मेरा मुन्ना

Foil wrapped
for Freshness
and Flavour

चन्दामामा
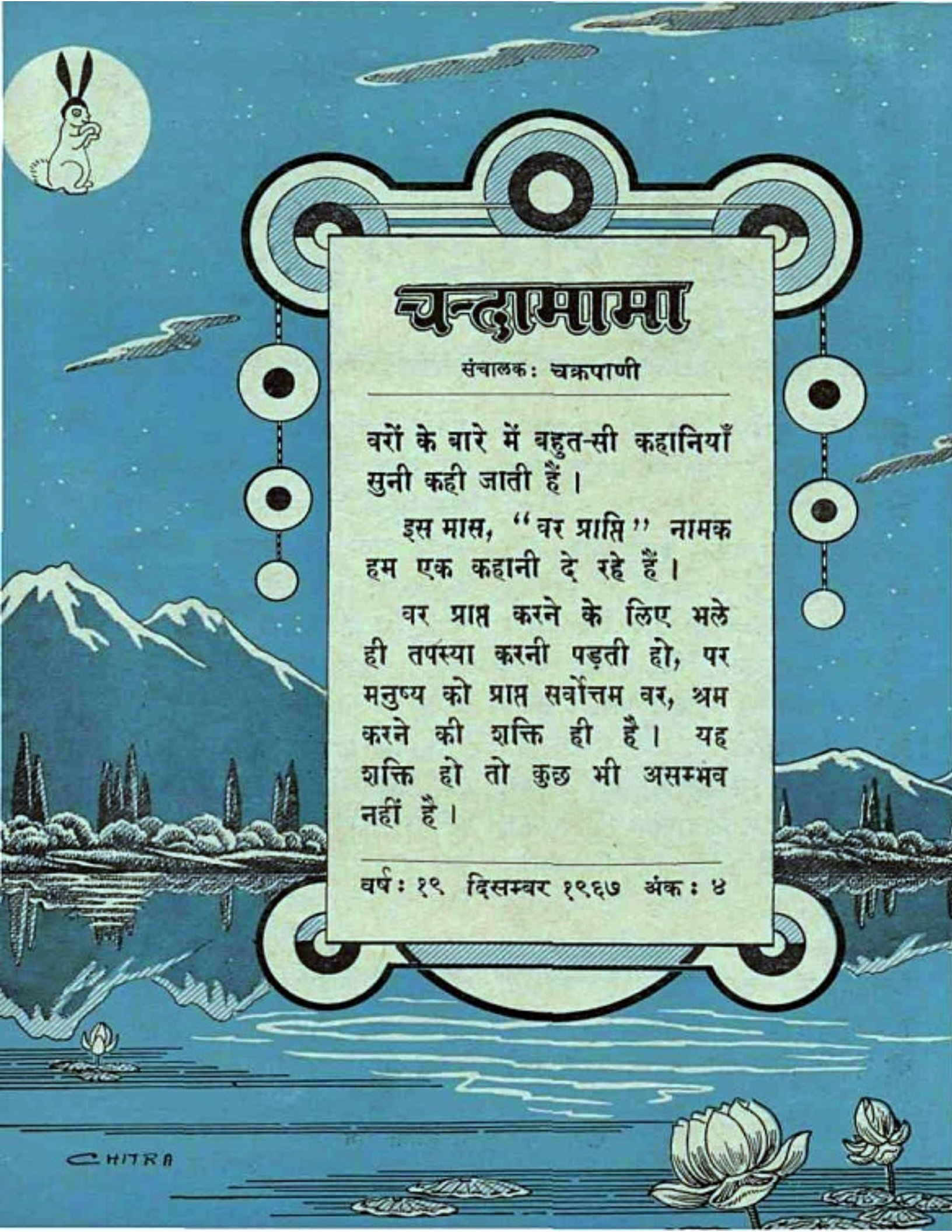
संचालक: चक्रपाणी

वरों के बारे में बहुत-सी कहानियाँ सुनी कही जाती हैं।

इस मास, "वर प्राप्ति" नामक हम एक कहानी दे रहे हैं।

वर प्राप्त करने के लिए भले ही तपस्या करनी पड़ती हो, पर मनुष्य को प्राप्त सर्वोत्तम वर, श्रम करने की शक्ति ही है। यह शक्ति हो तो कुछ भी असम्भव नहीं है।

वर्ष: १९ दिसम्बर १९६७ अंक: ४

भारत का इतिहास

इस प्रकार क्लाईव अपने ही बल सामर्थ्य पर बेन्गाल में तीन वर्ष शासन करता रहा। फिर २५, फरवरी १७६० को वह अपने देश चला गया। इसके बाद नवाब के लड़के मीरान के लड़के के मरने के कारण मीर जाफर के बाद कौन नवाब बने, यह प्रश्न उठा। मीर जाफर अयोग्य और असमर्थ था। यही नहीं, उसको अंग्रेजी कम्पनी को जो रकम चुकानी थी, उसने वह भी न चुकाई थी। इसलिए अंग्रेजों ने नवाब के दामाद मीर कासिम को नवाब बनाने की सोची। मीर कासिम ने उनसे एक गुप्त सन्धि भी कर ली। (२७ सितम्बर १७६०) मीर कासिम कम्पनी के ऋण के बदले बर्दवान, मिदनापुर, चिटगान्ग के जिलों को कम्पनी को देने के लिए मान गया। इसके बदले अंग्रेजों ने उसे पहिले डिप्यूटी सुबेदार और फिर नवाब बनाने का वचन दिया। पर मीर जाफर ने उसका डिप्यूटी सुबेदार बनाया जाना नहीं माना। जब राजमहल के अंग्रेजों द्वारा घेरे जाने की नौबत आयी, तो मीर जाफर ने पद त्याग कर दिया। तुरत मीर कासिम को नवाब घोषित कर दिया गया।

बेन्गाल में एक विचित्र परिस्थिति पैदा हुई। नवाब इस ख्याल में था कि सारे अधिकार उसके थे और अंग्रेज इस प्रकार का व्यवहार कर रहे थे, जैसे वे उनके हों। बहुत देर तक यह निर्धारित न किया जा सका कि वे वस्तुतः किनके थे। आखिर यह निर्धारित करने का भार अपने ऊपर लेकर, मीर कासिम आफत मोल ले बैठा।

७४. बेन्गाल में अंग्रेजी राज

अंग्रेजी कम्पनी ने बिना किसी कर के अपने माल को बेन्गाल ले जाने की और वहाँ व्यापार की छूट की अनुमति बादशाह से ले रखी थी। परन्तु उस अधिकार का दुरुपयोग कम्पनी के कर्मचारी अपने व्यापार के लिए करने लगे। इस बारे में नवाब ने कई बार आपत्ति प्रकट की। परन्तु कोन्सिल के सदस्यों ने अपने स्वार्थवश उस पर ध्यान न दिया। इस कारण मीर कासिम और अंग्रेजों में तनातनी बढ़ी।

अन्त में १७६२ बेन्गाल के गवर्नर वान्सिटार्ट ने मुन्गेर, जहाँ मीर कासिम ने अपनी नई राजधानी बनाई थी, जाकर उससे एक विशेष सन्धि की। परन्तु कलकत्ता के कोन्सिल के सदस्यों ने इसे नहीं माना। तब नवाब ने धमकी दी कि वह सब पर से कर हटा देगा। पर अंग्रेजों को कहना था कि सिवाय उनके माल के बाकी सब के माल पर कर लगाया जाये। पटना के अंग्रेजों के फेक्टरी के प्रतिनिधि एलिस ने बड़ा कड़ा रवैय्या अखतियार किया। उसने पटना को काबू करने तक की कोशिश की। उसकी यह कोशिश नाकामयाब रही। उनकी साजिश भी असफल हुई। इसके कारण ही १७६३ में मीर कासिम की अंग्रेजों के साथ लड़ाई शुरु हुई।

१० जून को मेजर अडम्स ने ११०० गोरे सिपाहियों और ४००० देसी सिपाहियों को लेकर मीर कासिम का मुकाबला किया। नवाब की सेना में १५००० लोग थे। सब पाश्चात्य रीति से प्रशिक्षित थे। तो भी मीर कासिम की हार ही हुई। वह कौत्वा, मुर्शिदाबाद, गिरिया, सूति, उदयनला, मुन्गेर की युद्ध भूमियों से खदेड़ दिया गया। उसने पटना में जाकर

आश्रय लिया। फिर वहाँ कई अंग्रेज कैदियों और कई अपने प्रमुख कर्मचारियों की हत्या करवाकर अवध भाग गया। नवाब शुजाउद्दौला और शाह आलम द्वितीय से मिलकर, बेन्गाल को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए व्यवस्था करने लगा।

इस संयुक्त सेना को अंग्रेजों ने २२ ओक्टोबर, १७६४ में बक्सर के पास हरा दिया। तुरत शा आलम अंग्रेजों की तरफ़ हो गया। उसने उनसे अलग सन्धि कर ली। मीर कासिम फरार हो गया। १७७७ में दिल्ली के आसपास कहीं वह बुरी मौत मरा। सिराजुद्दौला साजिश के कारण हरा दिया गया था। पर मीर कासिम दुर्बलता के कारण। इस बार अंग्रेजों की विजय वास्तविक थी और बहुत महत्वपूर्ण भी।

यह युद्ध होते ही अंग्रेजों ने मीर जाफर को नवाब घोषित किया और उससे बहुत-सी अतिरिक्त सुविधायें प्राप्त कीं। १७६५ मीर जाफर के मर जाने के बाद उसका लड़का नजमुद्दौला नवाब बना। पर वह नाम मात्र का ही नवाब था। अधिकार सब अंग्रेजों के हाथ में थे।

१७६५ मई में क्लाईव दूसरी बार गवर्नर बनकर बेन्गाल आया। शा आलम से उसने सन्धि कर ली। बेन्गाल, विहार, उरीसा में "दीवानी" अंग्रेजों के हाथ में आ गई। (अगस्त १२, १७६५) क्लाईव ने राजनैतिक निपुणता ही दिखाई। उसने कम्पनी के कर्मचारियों में प्रचलित भ्रष्टाचार को हटाया। सेना की बुरी आदतों को भी ठीक किया। १७६७ फरवरी में वह स्वदेश वापिस चला गया।
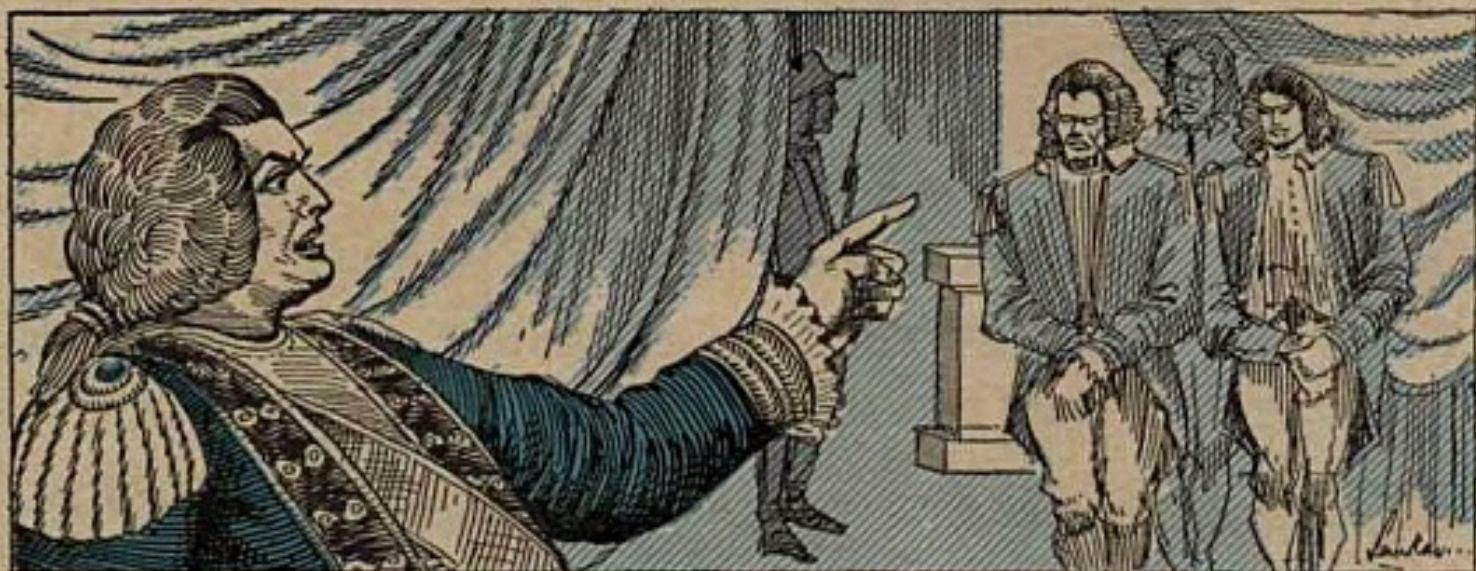
स्वर्ग के लिए स्पर्धा

प्रजापति की दो पत्नियाँ थीं, अदिति और दिति। अदिति के लड़के देवता, दिति के लड़के दैत्य छुटपन से ही आपस में वैरी थे। हमेशा लड़ा झगड़ा करते। यह सोचकर कि इन दोनों के झगड़ों का कभी निबटारा नहीं होगा, प्रजापति ने देवताओं के लिए ऊपर स्वर्ग बनाया और दैत्यों के लिए नीचे पाताल लोक। फिर उसने अपनी सन्तान से कहा—"तुम दोनों इकट्ठे न रहो, अपने अपने अलग लोकों में रहो।"

पर दैत्यों ने हठ किया कि उन्हें स्वर्ग ही चाहिये था। देवताओं ने साफ़ साफ़ कह दिया कि पाताल उनको गँवारा न था। इसका परिष्कार करने के लिए प्रजापति ने अपनी सन्तति से कहा—

"देवताओं में से एक और दैत्यों में से एक भूलोक में जाकर रहने का प्रयत्न करें। जिस तरफ़ की अधिक विजय हो, वह जाकर स्वर्ग में रहे। और दूसरे जाकर पाताल में रहें।"

इसके लिए देवता और दैत्य दोनों मान गये। भूलोक में जाने के लिए देवताओं ने अपनों में से एक और दैत्यों ने अपनों में से एक को चुन लिया। उन्होंने भूलोक में आकर देखा कि मनुष्य कैसे जी रहे थे।

"तुम कैसे जीने की कोशिश कर रहे हो?" दैत्य ने देवता से पूछा।

"सब की तरह मेहनत करके जीना चाहता हूँ।" देवता ने कहा।

रमामणि

"तो तुम मेहनत करके जीओ, मैं बिना मेहनत के ही जीऊँगा।" दैत्य ने कहा।

दोनों मिलकर एक भूस्वामी के पास गये। उन्होंने उससे कोई काम देने के लिए कहा। भूस्वामी ने दोनों को एक एक हल और एक जोड़े बैल दिये। और ज़मीन दिखाकर कहा—"इसमें हल चलाओ।"

दोनों ने हल चलाना शुरु किया। पर थोड़ी देर बाद दैत्य ऊब गया। उसने अपने बैल खोल दिये। और उनको चरने के लिए छोड़ दिया और स्वयं जाकर एक पेड़ के नीचे शाम तक सोता रहा।

जब दैत्य उठा, तो अन्धेरा होनेवाला था। देवता ने करीब सारे खेत में हल चला दिया था। जो थोड़ा बहुत बच गया था, उसमें दैत्य ने हल चलाया। फिर दोनों भूस्वामी के घर पहुँचे। भूस्वामी ने उनको अन्धेरी छोटी-सी कोठरी सोने के लिए दिखाई और अगले दिन सवेरे फिर मिलने के लिए कहा।

चूँकि दिन भर काम किया था, इसलिए देवता को लेटते ही नीन्द आ गई। चूँकि दैत्य दिन भर सोया था, इसलिए वह पल भर भी न सोया।

सवेरा होते ही दोनों अन्धेरी कोठरी से बाहर निकले। दैत्य ने देखा कि देवता के शरीर पर सोने की धूल चिपकी हुई थी। दैत्य के शरीर पर कुछ भी न थी। चूँकि उसने पिछले दिन कोई मेहनत न की थी उसके शरीर पर पसीना नहीं आया था। चूँकि देवता ने खूब पसीना बहाया था, इसलिए उसके शरीर पर कई तोला सोना आ चिपका था।

भूस्वामी ने उन्हें देखकर कहा—"रात को तुम्हारे शरीर पर जो सोना आ चिपका है, उसे तुम ही रख लो। कल तुमने जो काम किया था, उसके लिए वह ही प्रतिफल है।"

दैत्य बड़ा निराश हुआ। "आज रात मैं इस देवता से दुगना सोना कमाऊँगा।" उसने सोचा।

अगले दिन हल चलाने के लिए भूस्वामी ने एक और खेत दिखाया, देवता और दैत्य उसमें हल जोतने लगे। पिछले दिन की तरह दैत्य कुछ देर हल चलाने के बाद अलसा गया। बैलों को चरने छोड़कर एक पेड़ के नीचे लेट गया, और उसके नीचे अन्धेरा होने तक सोता रहा।

उस दिन भी सारा खेत, देवता ने ही जोता। घर जाने से पहिले दैत्य ने अपने सारे शरीर पर गोन्द पोत ली।

उनके घर जाते ही भी भूस्वामी ने दो नाँद दिखाकर कहा—"उनमें तुम अपने बैलों के लिए पानी भरो। एक नाँद के पास दैत्य ने अपने बैल हाँके, तो दूसरे के पास देवता ने। चूँकि दैत्य के बैलों ने दिन भर काम नहीं किया था,

इसलिए वे दो चार घूँट पानी पीकर चले आये। पर देवता के बैल सारा पानी पी गये, क्योंकि दिन भर काम करके वे बहुत प्यासे थे।

नाँद में पानी खतम होने के बाद उसकी तह में सोना दिखाई दिया। "यही तुम्हारी मजदूरी है, ले लो?" भूस्वामी ने देवता से कहा।

"और मेरी मज़दूरी?" दैत्य ने पूछा।

"अगर तेरे बैल मेहनत करते और नाँद का सारा पानी पी जाते, तो तुम्हारी मज़दूरी भी नाँद में होती। पर न तुमने

मेहनत की, न तुम्हारे बैलों ने ही। मैं क्या करूँ ?" भूस्वामी ने कहा।

यह सब देवता देख रहे थे उन्होंने कहा कि हमारा भाई जीत गया है। स्वर्ग हमारा है।

दैत्य इसके लिए नहीं माने।

"भूलोक में हल चलाना ही एक मात्र आजीविका का साधन नहीं है। उस लोक में विशाल समुद्र है। समुद्र से आजीविका करने के बारे में भी बाजी लगनी चाहिये।" दैत्यों ने कहा।

प्रजापति ने भूलोक से अपने लड़कों को बुला लिया, उनसे कहा—"तुम दोनों समुद्र में नावों पर जाओ और मछलियाँ पकड़ो। जो ज्यादह मछलियाँ पकड़ेगा, उसे ही स्वर्ग मिलेगा और दूसरे को पाताल।"

देवता और दत्य, अलग अलग एक एक नाव में गये और अलग अलग एक एक जाल लेकर समुद्र में मछली पकड़ने लगे। इस बार दैत्यों ने अपने भाई को जिताने के लिए एक चाल सोची। उनमें से बहुत से समुद्र में जा घुसे और अपने प्रतिनिधि दैत्य के जाल में मछलियाँ भरने लगे।

देवता ने जब अपना जाल ऊपर निकाला, तो उसमें ढ़ेर-सी मछलियाँ थीं। उसी समय दैत्य ने भी अपना जाल खींचा। उसमें दस गुना अधिक मछलियाँ थीं। इस कारण जाल, उनके भार से बाहर आते ही फट गया। उसमें फँसी सारी मछलियाँ फिर समुद्र में जा कूदीं।

इस प्रकार दैत्य देवताओं को प्रतिस्पर्धा में न हरा सके। इसलिए स्वर्ग देवताओं का हो गया और दैत्य पाताल में रहने लगे।

पाताल दुर्ग

[१९]

[सूर्योदय होते ही मान्त्रिक के साथियों ने पाताल दुर्ग पर औषधी भस्मों का उपयोग किया। राक्षस उनके प्रभाव में, नशे में आकर एक दूसरे को मारने लगे। महाकलि हाथियों के रथ पर सवार होकर वहाँ आया। विरूप का छोड़ा हुआ गरुड़ पक्षी, सोने के मगर के बच्चे को पैरों में लटकाकर पाताल दुर्ग पर मँडराने लगा। उसके बाद—]

महाकली ने राक्षसों को काले गरुड़ की ओर देखते देखा। उसने अपने हाथियों के रथ को रोका। सिर उठाकर उसने ऊपर देखा। उसे गरुड़ के पैरों से लकटता मगर का बच्चा दिखाई दिया। पक्षी में कोई विशेषता न थी। उस तरह के पक्षियों को उसने कभी पूर्व में पहाड़ों के ईलाके में देख रखा था। पर सोने की तरह चमाचमानेवाला मगर का बच्चा, इसके पैरों से कैसे लटक रहा है? क्या कहीं सोने के मगर होते हैं?

राजा को यूँ अचरज में पड़ा देख, एक बूढ़े राक्षस ने उसके रथ के पास आकर कहा—"राजा, हमारे लोग इस पक्षी को आपके पिता घोरकलि समझकर नमस्कार कर रहे हैं। आपका नमस्कार करना भी अच्छा है, नहीं तो वे सोचेंगे कि आप में पिता के प्रति भक्ति

आदर नहीं है। वे आपकी निन्दा करेंगे।"

"गरुड़ पक्षी मेरा पिता कैसे हो सकता है? इसमें जरूर कुछ धोखा है? सप्ताह भर से पहाड़ों पर से हमें कोई देख रहा है, इसकी खबर मुझे पहिले मिल चुकी है। यह शायद तुमको नहीं मालूम है?" महाकलि ने गुस्से में कहा।

महाकलि की बात को बूढ़े राक्षस ने, ऊँचे पत्थर पर खड़े होकर, जोर से चिल्लाकर सबको बताया—"यह पहाड़ों की चोटियों पर रहनेवाला अन्धा गरुड़ पक्षी है, महाबलवान धोरकालेश्वर नहीं है। यह बात हमारे दुर्गेन्द्र महाकलि बता रहे हैं।"

यह सुनकर, राक्षसों में से कई ने पत्थर लेकर गरुड़ पर निशाना मारा। कई ने यह सोचकर कि बूढ़ा, राजा का अपमान कर रहा था, उस पर तरह तरह के हथियार फेंके।

महाकलि ने अपने अंगरक्षकों को पास बुलाया और उनसे सलाह मशवरा करने लगा।

पहाड़ की चोटी पर से, पेड़ों की झुरमुट के पीछे से कालशम्बर मान्त्रिक ने यह सब देखा। अट्टहास करके उसने कहा—"सरोवर के बड़े पत्थर को अब तक हमारे लोगों ने बाहर निकाल दिया होगा। गुफ़ाओं में रहनेवाले हमारे लोग, अभी तक मालूम होता है, पहाड़ पर नहीं आये हैं? जय शाम्भवी, जल्दी आओ, जल्दी आओ।" वह मन्त्रदन्ड को उठाकर घुमाने लगा।

इतने में पहाड़ इस तरह हिला, जैसे कोई भूचाल आया हो। पाताल दुर्ग की ओर पहाड़ की तलहटी पर, दो-चार

जगह पानी, ताड़ के पेड़ के बराबर ऊपर उठा और गरजता दुर्ग के सामने के मैदान में बहने लगा।

"प्रलय, प्रलय..." कई राक्षस, भय से काँपते हुए चिल्लाये। बूढ़े राक्षस ने आवाज़ और ऊँची करके कहा—"घोर कालेश्वर यह सोचकर कि हमने उनका अपमान किया है, हमें दण्ड दे रहे हैं। राक्षसों का सर्वनाश होकर रहेगा और इसके लिए जिम्मेवार महाकलि ही है। यह मैं पहिले ही बताये देता हूँ।"

सरोवर में मान्त्रिक के जिन अनुचरों ने, बेलों की मदद से पत्थर खींचा था, वे भागे भागे उसके पास आये। भद्र ने बड़े जोश के साथ कहा—"महामान्त्रिक, हम जीत गये हैं। अब तक जो तुमने बड़ा पत्थर छुपा रखा था, उसको बाहर खींचते ही, सरोवर में खलबली मच गई और पहाड़ इस तरह काँप उठा, जैसे कोई भूकम्प आया हो।"

"यह भूकम्प है? नहीं, नहीं, प्रलय है, महाप्रलय है। मैंने कई दिनों तक जलस्तम्भन करके, सरोवर की तह से, पहाड़ों में सुरंगें बनाकर रास्ते बनाये और मैंने उस पत्थर को इस तरह रख दिया, ताकि जरूरत पड़ने पर, सरोवर के पानी में पाताल दुर्ग को डुबो सकूँ। पत्थर अपनी जगह से हिला कि नहीं कि पाताल दुर्ग पानी में डूब जायेगा। पर इस बीच कुछ राक्षसों के, पगडंडी से, किले से जंगल में भाग जाने की गुंजाईश है। ताकि उनमें से कोई भी इस तरह न भाग निकले, इसलिए ही हमें इतनी देर प्रतीक्षा करनी पड़ी।" कहते कहते, कालशम्बर ने अपने कान पर हाथ रखकर कुछ सुना—"क्या हैं ये आवाजें? क्या तुम्हें

कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा है?" उसने पास खडे लोगों से पूछा।

"कहीं दूर शेर, बाघ गरजते मालूम होते हैं।" विरूप ने कहा।

"गरज रहे हैं?" मान्त्रिक ने मुस्कराकर कहा—"वे कुम्भीर के पाल्तू जानवर हैं। उनको दो-तीन दिनों से खाना नहीं मिला है, वे अब उस एक ही एक संकड़े रास्ते की रक्षा करने आ रहे हैं। उस रास्ते से महाकलि अपने साथियों के साथ नहीं भाग सकता यदि उसने, हिम्मत करके, हमारे पहाड़ की ओर आने की कोशिश की, तो हमारे लोग उसे मार देंगे। उन सब क्रूरों को पानी में डूबकर मरना होगा।"

"कुम्भीर, जो शशिकान्त और राजकुमारी कान्तिसेना को लेकर, सरोवर की ओर निकला था, न मालूम उसका क्या हो गया है?" भद्र ने पूछा।

"मेरे मित्र और शत्रु पुलिन्द की नौजवान स्त्री भामा सिन्गी भी उसी के साथ है, तुमने बताया था। वह चुड़ैल उन सबको कहीं गलत रास्ते पर तो नहीं ले गयी है?" विरूप ने पूछा।

"हमारे लिये सबसे अधिक मुख्य राजकुमारी है। हमने कदम्ब राज्य के लोगों को वचन दे रखा है कि उन्हें लाकर हम रानी बनायेंगे।" धूमक ने कहा।

सोमक ने सिर हिलाते हुए, कन्धे पर लटके तरकश से बाण निकाले।

कालशम्बर ने कुछ खिझकर, सिर एक तरफ़ मोड़कर कहा—"अगर अब हर कोई अपने अपने मतल्व की बात देखने सोचने लगे, तो आफत आ पड़ेगी।

जिसने मेरे पिता को इतनी क्रूरता से मारा था अगर मैं उस महाकलि राक्षस को मार सका, तो मेरा बदला निकल जायेगा। पर इससे क्या लाभ होगा? पर उसके साथियों में से कोई एक और पाताल दुर्ग को अड्डा बनाकर, महाकलि से भी अधिक अत्याचार कर सकता है। इसलिए, पहिले इन सब राक्षसों को यम के पास भेजना होगा। उसके बाद, राजकुमारी, मन्त्री के लड़के शशिकान्त की हिफाजत के बारे में सोचा जा सकता है। कुछ सब्र करो।"

इन बातों का, भद्र और धूमक एक साथ ही उत्तर देने जा रहे थे कि पाताल दुर्ग की ओर से भयंकर शब्द सुनाई दिया।

मान्त्रिक और उसके साथी भागे भागे गये, उन्होंने पत्थरों पर झुककर नीचे देखा। पाताल दुर्ग का एक हिस्सा पानी की चोट के कारण ढ़ह गया था। जो राक्षस उस पर खड़े थे, वे पानी में कूद कर हाहाकार करके तैरने लगे। कई हाँफते हाँफते मान्त्रिक के पहाड़ की ओर तैरते चले जा रहे थे।

कालशम्बर ने मन्त्रदण्ड उठाकर कहा–"भद्र और धूमक ज़रा मेरी बात सुनो। विश्वास करो कि शशिकान्त और राजकुमारी सुरक्षित हैं।" कहकर, उसने मन्त्रदण्ड उनके सामने करके कहा–"देखो, इस पेड़ के नीचे वे दिखाई दे रहे हैं न? उनकी बगल में कुम्भीर खड़ा है।"

वे अभी मन्त्रदण्ड की ओर ही देख रहे थे कि मान्त्रिक ने कहा–"भद्र, जो हमने बड़ी बड़ी गुलेंलें छुपा रखी थीं उनका राक्षसों पर उपयोग करने का यही अच्छा मौका है। जो इधर तैरते आ रहे हैं, उन पर निशाना लगाकर पत्थर फेंको। सम्भलकर रहो।"

भद्र तालियाँ बजाकर, गुफ़ाओं में से बाहर आये हुए मान्त्रिक के कुछ सेवकों लेकर, पेड़ों के झुरमुट के पास गया।

वहाँ बड़े बड़े पत्थर रखे हुए थे। उनको उसने तैयार करके रख लिया, उनके उपयोग के लिए आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

भद्र ने समीप जाकर कहा–"अब पत्थर बरसाओ। एक एक चोट से एक एक राक्षस को यम लोक भेज दो।"

फिर उसने कुछ साथियों से कहा–"तुम जितने पत्थर ढ़ो सको, उतने उनके पास ले जाओ।"

कुछ देर बाद, पेड़ों पर से बड़े बड़े पत्थर, तैरते हुए राक्षस पर बरसने लगे।

चोट लगते ही राक्षस जोर जोर से चिल्लाते छटपटाकर पानी में डूबकर फिर तैर उठते।

तब तक पाताल दुर्ग के काफी भाग में पानी चला गया था। किले के कुछ बुर्ज

ही पानी के ऊपर दिखाई दे रहे थे। कुछ राक्षस उन बुर्जों को पकड़कर लटक रहे थे।

नीचे झाग होते पानी को देख सोने का मगर का बच्चा, उसमें कूदने के लिए छटपटाने लगा। इसलिए बहुत कोशिश करने पर भी गरुड़ पक्षी ऊपर न उड़ सका। पानी से चार पाँच गज ऊपर ही उड़ता गया।

"घोरकलेन्द्र हमें बचाने के लिए आ रहा है।" पाताल दुर्ग के बुर्ज से लटकता हुआ एक राक्षस चिल्लाया।

तुरत बहुत-से लोग, "घोर कलेन्द्र, रक्षा करो, हमारी रक्षा करो" चिल्लाने लगे।

यह सब देख, कालशम्बर का हँसते हँसते पेट फूल-सा गया। "विरूप, जैसे तुमने कहा था, तुम्हारा काला गरुड़ पक्षी सचमुच देवता पक्षी ही है। उसकी सहायता से हमने राक्षसों की आँखों में अच्छी तरह धूल झोंकी। पर महाकलि का क्या हुआ? कहीं वह पानी से बचकर निकल तो नहीं गया है?" उसने चिन्ता प्रकट की।

सबने पानी की ओर ध्यान से देखा। यकायक दो हाथी पाताल दुर्ग के बुर्ज के पीछे से आगे आये। उनमें से एक पर महाकलि सवार था। दूसरे पर उसके दो अंगरक्षक बैठे थे। सब के कपड़े गीले थे।

महाकलि ने अपने हाथ की गदा उठाकर कहा—"उस मनहूस पक्षी को पिता समझकर न मालूम हमने क्या क्या किया और आनेवाली आपत्ति के बारे में सोचा ही नहीं। अब सोचने से क्या फ़ायदा? सब जंगल की ओर जानेवाले

सुरंग की ओर तैरकर आओ, जो जो पहाड़ पर जाने की कोशिश कर रहे हैं, उनको वह दुष्ट मान्त्रिक कैसे पत्थर फेंक फेंक कर मार रहा है, देख नहीं रहे हो?" वह जोर से चिल्लाने लगा।

महाकलि के अंगरक्षकों ने अपने हाथियों को पानी में घुमाया। वे महाकलि के बताये पहाड़ी सुरंग की ओर जाने लगे। महाकलि ने उस ओर हाथी को चलाते हुए कहा–"जल्दी आओ...अगर हम सुरंग पार करके ज़मीन पर पहुँच गये तो उस मान्त्रिक को मरा समझो। मेरी होनेवाली पत्नी कान्तिसेना कहाँ है? और वह शशिकान्त कहाँ है, जिसकी वलि दी जानी थी। चुड़ैल भामासिंगी क्या डूब गई है? हाँ...मगर कुम्भीर कहाँ है? वही तो है, उन सब का चौकीदार। कुम्भीर...कुम्भीर!" वह पुकारने लगा।

"महाकलि की अक्ल मारी गई है। अब यह सन्धि का समय है न? तो चलो, सब पहाड़ी सुरंग के पास चलें, वह कुम्भीर जंगली जानवरों की मदद से द्वार की रक्षा कर रहा होगा। पर राक्षसों के सामने भला शेरों की क्या चलेगी? हमारा कुत्तों के साथ लड़ने के बराबर है!" कहकर कालशम्बर तेज़ी से चलने लगा।

सब राक्षस अपने राजा के पीछे तैरते तैरते सुरंग के मार्ग की ओर जाने लगे। मान्त्रिक ऊँचे नीचे रास्ते पर चढ़ता उतरता कहीं कहीं पहाड़ के छोर पर रेंगता, उनसे कुछ देर पहिले ही वहाँ पहुँचा। उसे जंगल की ओर कुम्भीर और उसके वंश के कुछ राक्षस दिखाई दिये।

(अगले अंक में समाप्त)

वर प्राप्ति

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव उतारकर कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित वेताल ने कहा—"मैं नहीं जानता कि तुम किस सुपरिणाम के लिए इतने कष्ट उठा रहे हो। हयग्रीव की तरह बड़े बड़े परिणाम खोकर थोड़ा फल ही कम से कम पाओ। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं हयग्रीव की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" वह यूँ कहानी सुनाने लगा।

महावली नदी के प्रान्त में हयग्रीव नाम का एक युवक, तालाब के नीचे थोड़ी खेती करके, जिन्दगी बसर किया करता था। कुछ साल बाद वह तालाब धीमे

वेताल कथाएँ
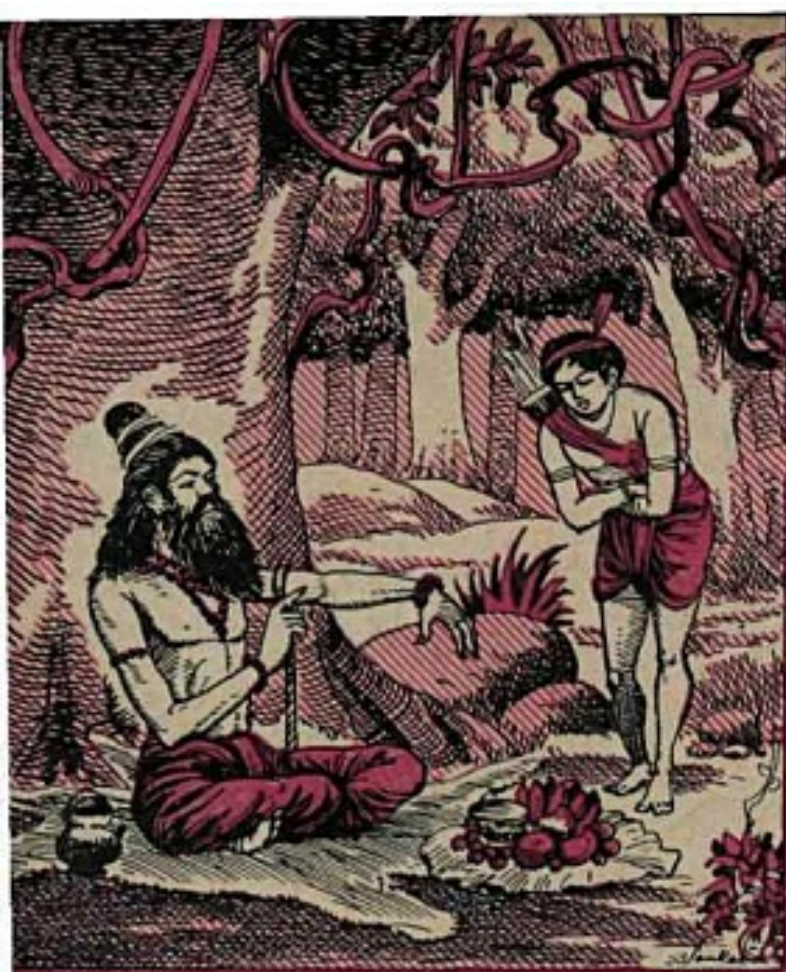
धीमे सूखने लगा। हयग्रीव को बड़ा नुक्सान हुआ। जब खेती से गुज़ारा नहीं हुआ, तो वह जंगल पर निर्भर रहने लगा। उसकी हालत बहुत बुरी हो गई।

एक बार कहीं जंगल में उसे एक जगह एक मुनि तपस्या करता दिखाई दिया। हयग्रीव उसके पास फल, फूल शहद इकट्ठा करके ले गया। उन्हें मुनि के सामने रखकर उसने साष्टान्ग किया। मुनि ने उसके उपहार स्वीकार करके उसको आशीर्वाद दिया।

इसके बाद, रोज हयग्रीव कुछ फल और शहद मुनि को लाकर देता। फिर अपना काम काज देखा करता। इस तरह कुछ दिन बीतने के बाद, उस मुनि ने हयग्रीव से कहा—"आज पूर्णिमा है। आज अगर तुमने कुछ माँगा, तो उसे देने की शक्ति मुझ में है। इसलिए तुम अपनी स्थिति के अनुरूप कुछ माँगो।"

हयग्रीव को सिवाय दरिद्रता के कोई और बाधा नहीं थी। "स्वामी, यदि मुझे हज़ार सोने के सिक्के मिले, तो मेरी ज़िन्दगी चैन से कट जायेगी।"

"तो देता हूँ....घर जाकर देखो।" मुनि ने कहा।

हयग्रीव ने जब घर जाकर देखा, तो एक कलश में सोने के सिक्के भरे पड़े थे? वह धन देखकर वह फूला नहीं समाया। मुनि के प्रति उसमें भक्ति उमड़ आयी। इसलिए यद्यपि उसे जंगल में कोई काम न था, तो भी रोज, दूध और फल लेकर वह जंगल जाता और मुनि को उन्हें समर्पित करता और यूँ अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता।

जब वह गरीब था, तब उससे कोई बात बात नहीं किया करता था। जब

उसके पास पैसा आ गया, तो गाँव में सब उसके चाहनेवाले हो गये। सब उसके हितैषी हो गये।

"अच्छा घर बनाओ। अच्छे कपड़े पहिनो। खुद खाओ। दूसरों को खिलाओ। वह पैसा जो खर्चा न जाता हो, उसका साथ रहना, या न रहना बराबर है। जब तुम अच्छी तरह रह रहे होगे, तो बड़े घरवाले तुम्हें अपनी लड़की शादी में देंगे। तब तुम्हारी हैसियत हर तरह से बढ़ेगी।" इस तरहकी सलाह लोगों ने उसे दी और उससे खूब खर्च करवाया।

एक महीना हो गया। वह रोज जंगल जाकर मुनि को उपहार दिया करता था। एक रोज मुनि ने उससे कहा—"आज पूर्णिमा है। अगर तुम्हें कोई इच्छा हो तो बताओ। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर सकता हूँ।"

"स्वामी, आपकी मदद से मेरी गरीबी तो चली गई। अच्छी लड़की से शादी करके मैं गृहस्थी का सुख अनुभव करना चाहता हूँ। यदि आपने अच्छे लक्षण वाली सुन्दर, अच्छी लड़की से शादी करवा दी, तो मैं बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।" हयग्रीव ने कहा।

"अच्छा भाई! घर के रास्ते में इसी जंगल में तुम्हारी मनचाही कन्या मिलेगी। उसे ले जाकर, उसके साथ शादी कर लेना।" मुनि ने कहा।

जैसा कि मुनि ने कहा था, हयग्रीव जब वापिस जा रहा था, तो एक पेड़ के नीचे, एक बड़ी सुन्दर लड़की खड़ी थी। हयग्रीव ने उससे पूछा—"तुम कौन हो? तुम्हारे लोग कौन है? यहाँ तुम क्यों खड़ी हो?"

"मुझे कुछ नहीं मालूम।" उसने कहा।

"तो क्या मेरे साथ आकर मुझसे शादी करोगी?" हयग्रीव ने पूछा। वह इसके लिए मान गई। उसने उससे शादी करके कुछ दिन बड़े सुख से काटे।

दो महीने बीत गये। यकायक हयग्रीव की पत्नी बीमार हुई। और किसी दवा से फायदा नहीं हुआ और उसकी मौत हो गई। उसी समय उसके घर में चोर आये और जो कुछ पैसा बच गया था, वे उसे उठा ले गये।

हताश होकर, हयग्रीव जंगल में मुनि के पास गया और उसने अपनी आपत्तियों के बारे में कहा—"स्वामी! आपने मुझ पर बड़ा अनुग्रह करके दो वर दिये। पर मैं उन दोनों वरों को खो बैठा। मेरी हालत वही है, जो पहिले थी। आप ही मेरी मदद कर सकते हैं।"

मुनि ने सिर हिलाकर कहा—"आज पूर्णिमा है। अगर तुम चाहो तो आज मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर सकता हूँ। उसके लिए यह अन्तिम अवसर है। चूँकि यहाँ मेरी तपस्या खतम हो चुकी है कल मैं हिमालय चला जाऊँगा। फिर तुम्हें दिखाई नहीं दूँगा।"

"यही बात है, तो मुझे फिर धन और पत्नी दीजिये। मैं नया वर कोई नहीं माँगूँगा।" हयग्रीव ने कहा।

"कोई एक वर माँगो। पर यह याद रखो कि यह अन्तिम अवसर है।" मुनि ने कहा।

हयग्रीव ने कुछ देर सोचकर कहा—"अगर यही बात है, तो उस तालाब में कभी पानी खतम न हो, जिसकी बगल में मेरा खेत है। उसमें हमेशा पानी रहे।"

"तो ऐसा ही रहेगा।" मुनि ने कहा।

अगले दिन जब हयग्रीव अपने खेत के पास गया, तो सूखे तालाब में फिर पानी आ गया था। हयग्रीव ने अपने खेत में हल जोता। उसे पानी से सींचा। फिर फसल लगाई। खूब फसल हुई। क्योंकि पानी की कमी नहीं रह गई थी, इसलिए हयग्रीव ने उस खेत में बदल बदलकर इतनी चीज़ें लगाईं कि उन्हें बेच बाचकर उसने काफ़ी पैसा भी जमा कर लिया। उसकी माली हालत बहुत सुधर गई। कई ने उसके साथ अपनी लड़की की शादी करनी चाही। हयग्रीव ने एक

सुन्दर लड़की से शादी कर ली। उससे उसकी कई सन्तान हुई। वह बहुत समय तक सुख से जीता रहा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा मुझे एक सन्देह है। हयग्रीव ने जिसे सिवाय पत्नी और धन के कुछ नहीं चाहिए था क्यों नहीं इनमें से एक चीज़ माँगी? क्यों उसने तीसरी चीज़ माँगी? अगर तुमने इन प्रश्नों का उत्तर जान बूझकर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"हयग्रीव ने तीसरी बार अक़्मन्दी से ही वर माँगा। उसे धन और पत्नी का सुख पहिले ही मिल चुका था।" इसलिए उसने उन्हीं दोनों वरों को फिर माँगा। पर जब मुनि ने उससे एक ही वर माँगने के लिए कहा तो उसे सोचना पड़ा। धन और पत्नी में से कोई एक उसे सन्तोष नहीं देता। यही नहीं, दोनों रहतीं भी नहीं। यह वह अनुभव से जानता था। इनकी अपेक्षा भूमि शाश्वत थी। खेती करना वह जानता ही था। उसके पास बस पानी की ही कमी थी। जब तक तालाब में पानी है, तब तक खेती करके वह आराम से रह सकता था। इसलिए उस सुख की अपेक्षा जो उसका नहीं हो सकता था, उसने उस सन्तोष के लिए वर माँगा, जो तालाब में सदा पानी के रहने से उसे मिल सकता था। उसके सुख का आधार भी यही था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सूर्यकमल

प्रभावती नगर के राजा विश्वावसु के जितेन्द्रिय, पराक्रम, शत्रुजित और धवलकीर्ति चार लड़के थे। सब पराक्रमी थे। पिता को भी उन पर समान रूप से प्रेम था। पर उनमें से एक ही उसके बाद राजा बन सकेगा, यह चिन्ता उसे सताती। इसलिए उसने उसके बाद राजा कौन बने, यह निश्चित करने के लिए एक बात सोची।

विश्वावसु के बाप दादाओं के समय में महल में एक सूर्यकमल था। उससे स्वयं प्रकाश निकलता था। जब तक वह प्रभावती नगर में रहा, तो प्रजा सुखी रही। कभी कोई दुर्भिक्ष नहीं पड़ा। न कभी तंगी ही हुई। पर कुछ समय पहिले उस सूर्यकमल को कुछ चोर उठा ले गये। किसी को यह साफ साफ नहीं मालूम था कि वह इस समय कहाँ था। परन्तु कभी कभी अफवाहें उड़ा करतीं कि वह यहाँ था, वहाँ था। राजा ने सोचा कि उसके लड़कों में से जो कोई उस सूर्यकमल को खोज लायेगा, उसे वह राज्य का उत्तराधिकारी बनायेगा।

अपने पिता का निश्चय जानकर राजकुमार अच्छे समय पर चारों दिशाओं में निकल पड़े।

जितेन्द्रिय पूर्व की ओर गया। उसने रास्ते में जो कोई मिला, उससे सूर्यकमल के बारे में पूछा। कुछ समुद्री व्यापारियों से उसे मालूम हुआ कि वह कमल पूर्वी द्वीपों में कहीं था। वह जहाज़ में समुद्र पार कर एक द्वीप में गया। उस द्वीप में

रमेश जोशी
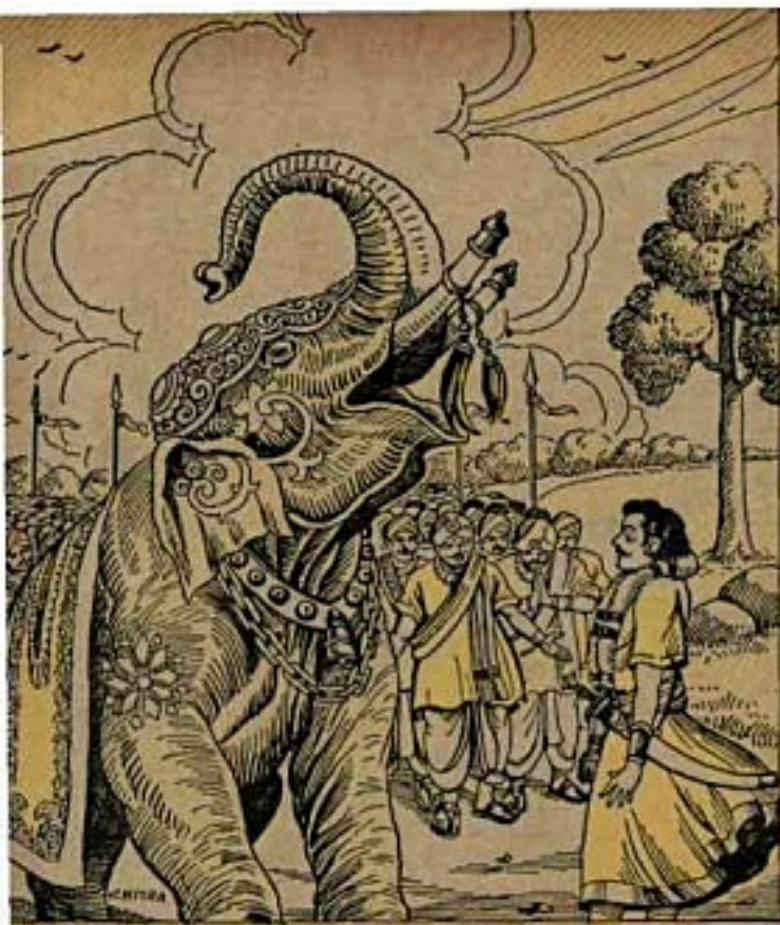
उसने पैर रखा ही था कि एक हाथी के पीछे लोग झुण्डों में आये। उस हाथी ने अपने सूँड़ की माला जितेन्द्रिय के गले में डाली। वह जान गया कि वह दो द्वीपों का राजा बन गया था।

ऐसा क्यों हुआ था, वह बाद में जान सका। उसने जिस द्वीप में पैर रखा था, उसके राजा को किसी व्यापारी ने कुछ समय पूर्व एक प्रकाशवाला कमल बेचा था। जब से वह उस द्वीप में आया था, उस देश में सम्पन्नता भी आ गई थी। यह देख पड़ोस के राजा को उन पर डाह हुई। उसने उस कमल को जैसे भी हो, चुराने के लिए अपने गुप्तचर भेजे। यहाँ के राजा को मालूम हो गया कि पड़ोस का राजा उन पर युद्ध करने की तैयारियाँ कर रहा था। इस राजा ने भी उस द्वीप में अपने गुप्तचर भेजे। युद्ध तो नहीं हुआ। पर इस देश के राजवंश को गुप्तचरों ने विष देकर मार दिया। दोनों द्वीपों में खलबली मच गई और इस खलबली में कोई सूर्यकमल उठा ले गया।

इसके गुजरने के कुछ दिनों बाद दोनों द्वीप के लोगों ने एक राजा चुनकर शान्ति से समय व्यतीत करने का निश्चय किया। एक शुभ दिन उन्होंने उस देश के मुख्य हाथी को एक माला दी और उसे छोड़ दिया। उसने उस माला को जितेन्द्रिय के गले में डाल दिया।

सूर्यकमल से क्या लाभ हुआ था, यह तो जितेन्द्रिय जानता था। पर उससे क्या हानि हुई थी वह जब उसे मालूम हुआ, तो उसमें उस कमल को पाने की इच्छा जाती रही। यही नहीं उसे एक साथ दो राज्य मिल गये थे। इसलिए उसने सुख से राज्य करने की सोची। उसने अपने

पिता को लिखा कि उसे कैसे राज्य प्राप्ति हुई थी। यह भी खबर भिजवायी कि उसने सूर्यकमल ढूँढ़ना छोड़ दिया था।

दूसरा राजकुमार पराक्रम पश्चिम की ओर गया। वह बहुत देशों से गुजर गया। पर उसे कहीं भी सूर्यकमल के बारे में कुछ नहीं मालूम हुआ। पर जब वह कोविदानगर पहुँचा, तो वहाँ की राजकुमारी कोई स्वयंवर रच रही थी। स्वयंवर में कोई भी राजकुमार जा सकता था। इसलिये पराक्रम भी उसमें गया। वह भी अपना देश वेश, नाम बताकर औरों के साथ बैठ गया। राजकुमारी सबको देखती आई। पराक्रम को देख कर वह रुकी और उसके गले में उसने माला डाल दी।

राजा, मन्त्री और स्वयंवर में उपस्थित राजकुमारों ने उसका अभिवादन किया। विवाह बड़े वैभव के साथ हुआ। कोविदराजा के लड़के न थे। एक ही लड़की थी। उससे जो कोई शादी करता, वह राजा होता। जब अचानक पराक्रम को कोविद राज्य इस प्रकार मिल गया, तो उसमें भी सूर्यकमल खोजने की इच्छा जाती रही। उसने भी दूतों द्वारा, अपने

पिता को अपने अनुभवों के बारे में बताया और साथ यह सूचना भी भेजी कि उसने सूर्यकमल खोजना छोड़ दिया था।

तीसरा शत्रुजित दक्षिण की ओर गया। वह सूर्यकमल के बारे में पूछताछ करता समुद्र तट तक पहुँचा। उसको कई ने बताया कि सूर्यकमल कभी दक्षिण में हुआ करता था पर उसको चोर उठा ले गये थे और पिछले कुछ सालों से उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। शत्रुजित यह सुन घर वापिस नहीं गया। वह समुद्र तट से, पश्चिम की ओर निकला। जब

उसे मालूम हुआ कि उस प्रदेश में उसका भाई था तो वह उसे देखने गया। शत्रुजित ने अपने भाई का, यह जानकर अभिनन्दन किया, कि वह एक सुन्दर राजकुमारी से शादी करके राजा बन गया था। वह फिर उत्तर की ओर निकला।

उसके कुछ दूर जाने के बाद, एक जगह एक छोटा पहाड़ दिखाई दिया। वह मामूली पहाड़ की तरह नहीं था। पास जाकर मालूम हुआ कि वह सोने का पहाड़ था। उसके पत्थरों में कम से कम आधा तो सोना होगा ही। शत्रुजित उसकी ओर आश्चर्य से देख रहा था कि उसे लगा, जैसे कोई उसे पकड़ रहा हो। शत्रुजित ने उसकी पकड़ से छूट कर जब पीछे की ओर देखा तो उसे कोई नहीं दिखाई दिया। यह सोचकर कि कोई अदृश्य शक्ति वहीं कहीं आस पास थी, वह तलवार निकाल कर घुमाने लगा। तुरत उसको आर्तनाद सुनाई दिया। उसे किसी राक्षस के शरीर के दो टुकड़े जमीन पर पड़े दिखाई दिये। राक्षस के सिर से एक गोली बाहर निकली। यह वह गोली थी, जिसका कारण राक्षस अदृश्य था।

राक्षस के मरते ही दूर के पेड़ों के झुरमुट से हजारों लोग भागे भागे आये। उसे घेर कर वे चिल्लाये—"महाराज की जय।"

"आप सब कौन हैं?" मुझे क्यों महाराजा कहकर बुला रहे हैं? शत्रुजित ने उनसे पूछा। उन्होंने अपनी कहानी सुनाई।

वे सब पास के सुवर्णकोश नगर से आये थे। उनकी सम्पत्ति केवल यह सोने का पहाड़ ही थी। पर इस पहाड़ पर कोई राक्षस आ गया था। वह अदृश्य

होकर नगर में आता, और जिसको चाहता उसे पकड़कर खा जाता। एक दिन उसने राजा को ही मार दिया। अगर कोई सुवर्ण पर्वत की ओर आता तो वह उसे पकड़कर मार देता। और खा जाता और उस दिन नगर की ओर नहीं आता। इस तरह लोग जान गये कि वह राक्षस कहीं यहीं सुवर्ण पर्वत के पास ही रहता था। वे देखा करते कि कोई उस सुवर्ण पर्वत की ओर तो नहीं गया है। अगर कोई न जाता, तो वे अन्धेरा होने से पहिले ही, घरों में घुस जाते और अन्दर से जोर से चटखनी लगा लेते और कई दिनों तक बाहर न निकलते। जब उनको मालूम होता कि राक्षस ने किसी को खा लिया है, तो वे निकला करते और जल्दी जल्दी अपने काम कर लिया करते। इस राक्षस के कारण उनकी जिन्दगी नरक के समान हो गई थी। ऐसे राक्षस को शत्रुजित ने मार दिया था, इसलिये उन्होंने उसको अपना राजा बना लिया।

जब उसे सोने का पहाड़ और राज्य मिल गया, तो उसमें भी सूर्यकमल को खोजने की इच्छा जाती रही। यही नहीं,

उत्तर दिशा की ओर उसका भाई धवलकीर्ति पहिले ही गया हुआ था। यदि सूर्यकमल कहीं उत्तर दिशा में है, तो वह उसे अवश्य ढूँढ़ निकाल लेगा। सब से अधिक वह ही हठी था। धवलकीर्ति की यात्रा उसके भाइयों की तरह जल्दी जल्दी नहीं हुई। इसका एक कारण था। ज्यों ज्यों वह उत्तर की ओर चलता जाता था, देश भी विशाल होता जाता था। यही नहीं, उसे सूर्यकमल के बारे में खबरें भी मिल रही थीं। उनमें से कई तो यूँही थीं। इसलिए उसका बहुत-सा समय व्यर्थ भी

जब उसने वहाँ जाकर देखा, तो उसका तीसरा भाई वहाँ राज्याभिषेक कर रहा था। सूर्यकमल को चुरानेवाला अदृश्य राक्षस, उसके भाई के हाथ मारा जा चुका था। परन्तु सूर्यकमल का कहीं पता न था।

"अरे भाई, अब कहाँ है सूर्यकमल? तुम भी कोई राज्य प्राप्त करो और मेरी तरह आराम से रहो।" शत्रुजित ने अपने भाई को सलाह दी। परन्तु धवलकीर्ति इसके लिए नहीं माना। उसने कहा कि वह सूर्यकमल ढूँढ़कर ही रहेगा। वह जान गया कि उसके तीनों भाइयों ने

गया। उत्तर की ओर धवलकीर्ति गया था, यदि उसके भाइयों में से कोई और गया होता, तो ऊब कर वह वापिस चला गया होता।

धवलकीर्ति ने बहुतों के मुख सुना कि चोर अक्सर सूर्यकमल चुरा ले जाते थे। उसे पता लगा कि चुरानेवाला एक अदृश्य राक्षस था और वह सुवर्णकोश नगर में रहा करता था। धवलकीर्ति को किसी ने बताया कि सूर्यकमल उसके पास था। यह सच था या झूट, यह जानने के लिए, वह सुवर्णकोश खोजता निकला।

वह काम छोड़ दिया था। इसलिए सूर्यकमल ढूँढ़ निकालने का काम उसने अपने ऊपर ले लिया।

"अगर यही बात है, तो यह अदृश्य गोली तुम्हारे काम आ सकती है। इसे अपने पास रखो।" कहकर शत्रुजित ने धवलकीर्ति को राक्षस की अदृश्य गोली दी। उसको लेकर, कुछ दिन यात्रा करने के बाद, धवलकीर्ति को सूर्यकमल के बारे में, कई के द्वारा निश्चित समाचार मिला। वह यह था कि सूर्यकमल सुधावर्त देश में था।

परन्तु धवलकीर्ति जब वहाँ पहुँचा, तो उसे वहाँ एक घोषणा सुनाई दी। कुछ देर पहिले ही किसी ने सूर्यकमल चुरा लिया था। सुधावर्त देश का राजा घोषणा करवा रहा था कि जो कोई उसे वापिस लायेगा, उसके साथ वह अपनी लड़की का विवाह करेगा।

धवलकीर्ति ढ़ेर-सी आशा लेकर आया था। यह सुनकर वह हताश हो गया। पर इतने में उसका हठ फिर जगा। यह चोरी कब हुई? सूर्यकमल कहाँ से चोर ले गये थे? वे वहाँ बिना किसी की सहायता के कैसे पहुँच सके? उसके मन में इस प्रकार के कई सन्देह उठे। जब तक इन सन्देहों का निवारण नहीं होता तब तक चोरों का पकड़ा जाना सम्भव न था। नगर में जिस किसी से यह पूछा जाता, तो वह कहता—"हमें ये सब नहीं मालूम है।"

धवलकीर्ति सीधे सुधावर्त राजा के पास गया और उससे उसने ये प्रश्न किये।

राजा ने किसी प्रश्न का उत्तर न दिया। ऊपर से उसने धवलकीर्ति पर सन्देह किया। "तुम सूर्यकमल के चुरानेवालों के गिरोह में से मालूम होते हो?" उसने पूछा।

"आपकी घोषणा के अनुसार जो कोई भी सूर्यकमल ढूँढ़ने निकलेगा, वह ये प्रश्न पूछकर रहेगा। यही नहीं। हमारे बाप-दादाओं के ज़माने में सूर्यकमल हमारा ही था। मैं उसे फिर पाने के लिए ही अपना देश छोड़कर आया हूँ। न कि आपकी लड़की से शादी करने के लिए।" धवलकीर्ति ने खिझकर कहा।

"अगर यही बात है, तो मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा। अगर तुम सूर्यकमल

को चोरों से ले भी आये, तो मेरा क्या फायदा है?" राजा ने कहा।

धवलकीर्ति ने अदृश्य गोली की सहायता से राजमहल में काफ़ी दिन गुज़ारे और उसने सबकी बातचीत सुनी। उसे बहुत से भेद तो मालूम हो गये, पर सूर्यकमल कैसे चोरी गया था, यह न मालूम हो सका। राजमहल में कोई भी सूर्यकमल के बारे में नहीं बता रहा था।

धवलकीर्ति अदृश्य होकर, जंगल में चोरों की जगह खोजता गया। उसे एक जगह एक मुनि तपस्या करता दिखाई दिया। यह सोचकर कि वह मुनि दिव्यदृष्टि से, शायद कुछ बता सके, वह उसके पास जा ही रहा था कि जंगल में सीटियाँ सुनाई पड़ीं। मुनि ने इन सीटियों के जवाब में स्वयं सीटी बजायी।

तुरत चार पाँच आदमी मुनि के पास आये और उससे कुछ बातें करने लगे। देखने में वे चोर से लगते थे। धवलकीर्ति अदृश्य होकर, उसके पास जाकर उनकी बातचीत सुनने लगा।

"इस महीने नगर की ओर कोई गिरोह नहीं आया मालूम होता।" एक चोर ने मुनि से कहा।

"वाकई चोरी हुई कि नहीं? मुझे तो सन्देह है।" एक और ने कहा।

"सूर्यकमल को चुराना है, तो हमारा गिरोह ही चुरा सकता है और भला उसे कौन चुरा पायेगा?" तीसरे ने कहा।

मुनि ने कुछ देर सोचकर कहा—"सूर्यकमल को किसी ने नहीं चुराया है। हमें ठगने के लिए राजा ने एक बड़ी चाल चली है। यदि यह कह दिया गया कि सूर्यकमल को कोई चोर उठा ले गया है तो हम उसके लिए उस तरफ़

जायेंगे नहीं। यही नहीं, हम आपस में एक दूसरे पर शक करके लड़ मरेंगे, राजा ने उसे ही, बिना किसी को बताये, कहीं छुपा दिया है। अब हमें राजमहल में भेदिये भी नहीं मिलेंगे। राजा को फायदा ही है।"

चोरों को बड़ा गुस्सा आया। वे बड़बड़ाये कि वे राजा को मार देंगे, उसे फाँसी पर चढ़ा देंगे। राजमहल जला देंगे।....वे जाने क्या क्या बक रहे थे। मुनि वेष में बैठे, उनके सरदार ने उनको समझाया कि वे जल्दबाजी न करें और वह ही कोई ऐसी बात सोच निकालेगा जिससे सब बातें खुद ठीक हो जायेंगी।

धवलकीर्ति फिर वहाँ खड़ा नहीं रहा। वह सीधे राजमहल गया। "राजा तुम अपनी लड़की का मेरे साथ विवाह करो। सूर्यकमल का पता लग गया है।"

राजा ने उसकी ओर सन्देह से देखा। "पता लग गया है, तो क्या फायदा! तुम्हें उसे मुझे देना है न?" उसने कहा।

"वह तुम्हारे पास ही है, यह बात तुम जानते हो। इसलिये तुम जल्दी ही तय

कर लो कि तुम अपनी लड़की मुझे देते हो या सूर्यकमल?" धवलकीर्ति ने यह कहते हुये तलवार निकाली और उसे राजा की छाती पर छुआई।

"मुझे मत मारो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें अपनी लड़की दूँगा और सूर्यकमल भी। परन्तु मैंने चाल चलकर चोरों की आँखों में धूल झोंकी है। तुमने सूर्यकमल मेरे पास नहीं रहने दिया, पर तुम भी उसे नहीं रख पाओगे।" राजा ने कहा।

धवलकीर्ति ने हँसकर कहा—"चोर तुम से और हम से भी अधिक अक़्लमन्द

हैं। वह तुम्हारे पास है, यह मुझे चोरों से ही पता चला है। और जहाँ तक उसका फिर चोरों के हाथ चले जाना है, मैं उसे कभी न होने दूँगा। तुम घबराओ मत।" धवलकीर्ति ने कहा।

राजा ने धवलकीर्ति का अपनी लड़की के साथ विवाह करने की व्यवस्था की और सूर्यकमल उसे उपहार के रूप में दे दिया। उस सूर्यकमल को गोदी में रखकर, धवलकीर्ति ने कोई मन्त्र पढ़ते पढ़ते होम की अग्नि में फेंक दी।

राजा...."अरे....अरे...." छटपटाया।

"महाराज अगर तुम यह जान जाओ कि इस सूर्यकमल के कारण कितने राज्य नष्ट हो गये हैं, तो तुम यूँ दुःखी न होगे। कहीं यह गवाही नहीं है कि सूर्यकमल जिस देश में होता है, वह देश सम्पन्न रहता है। पर बहुत-सी गवाही है कि इसके कारण बहुत-से अत्याचार और हत्याकाण्ड हुए हैं। इसके बारे में मैं जितना जानता हूँ, संसार में शायद कोई नहीं जानता। मैं बहुत दिनों से इसे इसका नाश करने के लिए ही ढूँढ़ रहा था। अब आप निश्चिन्त रहिये।" धवलकीर्ति ने कहा।

राजकुमारी से विवाह करके वह उसके साथ अपने देश चला गया। उसने अपने पिता से जो कुछ गुज़रा था, साफ़ साफ़ बता दिया। उसके पिता ने, सूर्यकमल का नाश करने के लिए उसकी प्रशंसा की और उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। पिता के बाद वह ही राजा बना और बहुत समय तक उसने सुखपूर्वक राज्य किया।

गुरु के उपदेश

एक नगर में एक गुरुकुल था। अनेक ग्रामों से विद्यार्थी वहाँ आकर पढ़ा करते। उनमें एक ही गाँव के तीन विद्यार्थी थे। उन्होंने नव वर्ष के दिन घर जाने की सोची और गुरु से इसकेलिए अनुमति माँगी।

"तो, हो आओ, पर यूँही बकवास न करना। याद रखो कि बातें मणियाँ हैं। जो पाठ सीखे हैं उन्हें न भूल जाना।" यह हितोपदेश देकर गुरु ने आशीर्वाद देकर उनको भेज दिया।

क्योंकि गुरु का आदेश था कि व्यर्थ वार्तालाप न किया जाय, इसलिए वे चुपचाप ही रास्ते पर चलने लगे।

उस नगर का राजा कभी कभी भेस बदलकर शहर में घूमा करता था। जब वह यूँ घूम रहा था, तो उसने इन तीनों लड़कों को देखा।

प्राय: अगर दो लड़के भी मिल-मिलाकर कहीं जाते हैं तो वे गप्प करते चलते हैं। ये तीन थे, पर तीनों चुप थे।

राजा यह न जान सका कि वे क्यों चुप थे। यह जानने के लिए उसने उनसे पूछा—"क्यों, भाई तुम क्यों यूँ मौन चल रहे हो?"

"बातें मणियाँ हैं, हम यूँहि बातें नहीं करते हैं।" एक विद्यार्थी ने कहा।

इस बात पर राजा ने मन ही मन हँसकर कहा—"तो मैं तुम में से हरेक को एक एक मणि दूँगा। तुम एक एक बात कहोगे?"

एक एक मणि पाकर विद्यार्थी खुशी खुशी अपने रास्ते चलते जाते थे। राजा भी उनकी बातें तभी भूल गया और उसके बाद जल्दी जल्दी राजमहल पहुँचा।

जब वह घर पहुँचा, तो राज ज्योतिषी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

प्रति दिन अपने गुप्त कक्ष में बैठकर, राजा उससे उस दिन उसको क्या क्या होने वाला था, सुना करता। चूँकि ज्योतिषी बिना लाग लपेट के सब बातें कहता था, इसलिए किसी और को उसकी बात नहीं सुननी चाहिए थी।

लड़कों ने सम्मति जताते हुए अपने सिर हिलाये।

राजा ने तीन मणियाँ निकालकर तीनों को देते हुए कहा—"अच्छा, तो तुम मणि-सी एक एक बात तो कहो।"

"जहाँ खतरा हो वहाँ असावधानी खतरनाक है।" एक विद्यार्थी ने कहा।

"बदला लेनेवाले को भी दूध दो।" दूसरे ने कहा।

"मूर्ख के लिए दण्ड ही औषधी है।" तीसरे ने कहा।

गुप्त कक्ष में पहुँचने के बाद ज्योतिषी ने राजा से कहा। "आज आपका सारा दिन आराम से कट जायेगा। पर रात को, आप पर विष-विपत्ति आ सकती है। प्राण का तो खतरा नहीं है पर विपत्ति अपनी शक्ति दिखाकर चली जायेगी।"

जब ज्योतिषी ने कहा कि प्राणों का भय न था, तो राजा ने विपत्ति की परवाह न की।

कितनी ही विपत्तियों से वह गुजर चुका था। परन्तु इस बार विद्यार्थी की

बताई हुई बात—"जहाँ खतरा हो वहाँ असावधानी खतरनाक है।" राजा को याद हो आयी। इसलिए उस दिन रात को खूब सावधान रहने की ठानी।

इस डर से कि कोई कहीं विष न खिलाये, उसने शाम को खाना भी नहीं खाया। वह रात-भर यह देखने के लिए जागने की सोची कि किस रूप में विपत्ति आती है और जाती है।

वह उस दिन रात को रानी के कमरे में नहीं गया। वह आराम के लिए अपने कमरे में गया।

चूँकि राजा ने भोजन नहीं किया था इसलिए रसोइया, एक लोटे में दूध और एक तश्तरी में फल रखकर चला गया। राजा ने उन्हें भी नहीं खाया।

कमरे में दीप जल रहा था। राजा अपने बिस्तरे पर जागा जागा लेटा हुआ था।

रात के समय राजा ने एक साँप को खिड़की के रास्ते आते देखा। यानि साँप के रूप में विपत्ति आयी थी।

उसे तलवार से काटकर राजा ने आराम से सो जाने को सोची। पर इतने में

एक और विद्यार्थी की बात याद हो आई—"बदला लेनेवाले को भी दूध दो।"

राजा ने उठकर, दूध के लोटे को साँप के रास्ते में रखा। साँप दूध पीकर, जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते रेंगता रेंगता चला गया।

राजा सवेरे तक जागता ही रहा, पर कोई खास बात नहीं हुई।

सवेरा होते ही, रानी, राजा को खोजती आई। "आप रात सोने नहीं आये? कहाँ सोये आप? आपकी आँखों से तो लगता है, जैसे रात भर उन्हें मूँदा ही न हो।"

"कुछ देखा था। उससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है।" राजा ने जवाब दिया।

रानी इस विषय में बड़ी मूर्ख थी। जब तक राजा हर छोटी बात उसे न बता देता, तो उसे चैन न होती। राजा भी खिझ खिझाकर उसके हर प्रश्न का जवाब दिया करता।

जब राजा ने उस दिन उसके प्रश्नों का उत्तर न दिया तो रानी ने और जिद पकड़ी। उसने कहा—"जब तक आप यह न बतायेंगे कि रात आप कहाँ थे और क्या कर रहे थे, मैं आपको नहीं छोड़ूँगी।"

"मूर्ख के लिए दण्ड ही औषधी है।" तीसरे विद्यार्थी की बात उसे याद हो आई। राजा ने पास पड़ी एक डण्डी उठाई और उससे रानी को दो बार मारा।

उसके बाद रानी ने राजा से ऊँटपटाँग प्रश्न नहीं किये। राजा उसके बाद सुख से रहने लगा।

बिका लड़का

एक गाँव में पति पत्नी रहा करते थे। पत्नी बहुत दिनों बाद गर्भवती हुई। जब महीने पूरे हो गये, तो उसने सोचा कि यदि किसी पुण्यक्षेत्र में प्रसव हुआ, तो सन्तान अच्छी होगी। उसने यह बात अपने पति से कही। वह उसको लेकर पास के पुण्यक्षेत्र के लिए निकल पड़ा।

वे अपना नगर पार करके शाम के समय एक बड़े जंगल में पहुँचे। चूँकि वह कमज़ोर थी, इसलिए कहीं बैठकर, उसने आराम लेने की सोची। रास्ते के पास पेड़ों की झुरमुट में उसे एक कुटीर दिखाई दिया। उसे पति वहाँ ले गया।

उस कुटीर में एक सिद्ध था। कुटीर के बरान्डे में उसने उनको रात काटने के लिए कहा। पत्नी तो एकदम सो गई। पर पति को नींद न आयी।

रात के समय, सिद्ध और उसके शिष्य का बात करना, पति को सुनाई दिया।

"इस स्त्री के कैसा बच्चा होगा?" शिष्य ने पूछा।

"लड़की पैदा होगी। परन्तु माँ मर जायेगी और वह लड़की भी एक लड़के को जन्म देगी और उसे बेच देगी।" सिद्ध ने कहा।

ये बातें सुन पति को बड़ा दुःख हुआ। मेरी पत्नी की मौत होगी? फिर मेरी लड़की, अपने लड़के को बेचेगी? यह सब तो शाप-सा मालूम होता है।

अगले दिन सवेरे ही उसने अपनी पत्नी को उठाया। सिद्ध को अपनी कृतज्ञता

विजयकुमार

जताई। उनसे विदा लेकर, वे तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। पुण्यक्षेत्र पहुँचने से पहिले ही प्रसव वेदना प्रारम्भ हो गई। एक किसान के घर उसने एक लड़की को जन्म दिया और तुरत मर गई।

सिद्ध के मुख से जो दो बातें निकली थीं, उनमें से एक तो ठीक निकल गई। जैसे भी हो, उसने दूसरी बात को जूठी साबित करने की सोचकर, अपनी लड़की को पालने पोसने के लिए एक आया रखी। अपना समय वह पैसा कमाने में लगाने लगा। उसका प्रयत्न सफल भी हुआ। लड़की की उम्र अभी पाँच वर्ष की भी नहीं हुई थी कि वह बड़ा धनवान बन गया।

उसने नगर के बाहर, एक स्तम्भ पर एक मकान बनवाया। उसके बड़े बुर्ज पर उसने अपनी लड़की और उसकी आया के रहने का इन्तज़ाम किया। वे नीचे नहीं उतर सकते थे। उनको जिन चीज़ों की जरूरत होती, उनको थालों में ऊपर पहुँचाया जाता। पिता ने इस ख्याल से ही यह किया था कि अगर इस लड़की ने विवाह करके एक लड़के को जन्म दिया और अगर उस लड़के को इसने बेच दिया, तो इससे भयंकर बात दूसरी और नहीं हो सकती थी।

उसकी लड़की रूपरानी उस बुर्ज़ पर बड़ी हुई। वह बड़ी खूबसूरत भी हो गई। वह सिवाय अपने पिता के और आया के किसी को न जानती थी।

वह एक दिन बुर्ज़ पर खड़ी होकर देख रही थी कि थोड़ी दूरी पर उसे एक खेमा दिखाई दिया। वह खेमा, वहाँ के राजकुमार के लिए लगाया गया था, जो वहाँ शिकार खेलने आया हुआ

था। रूपरानी की नज़र जब उस पर पड़ी, तो वह तम्बू के पास शिकार के वेष में खड़ा था। रूपरानी ने अपनी आया को बुलाकर कहा—"तुमने उस अजीब जानवर को देखा? उसका नाम क्या है?" उसने राजकुमार को दिखाया।

"वह जन्तु नहीं है, बेटी। राजकुमार है।" आया ने कहा। आया जो कहानियाँ रूपरानी को सुनाती थीं, उन सब में राजकुमार और राजकुमारियाँ हुआ करती थीं। वे प्रेम करके विवाह कर लिया करते थे। इस कारण रूपरानी ने उस राजकुमार को खास दृष्टि से देखा।

राजकुमार ने भी रूपरानी को देखा। उसके सौन्दर्य को देखकर वह चकित रह गया। पास आकर उसने उसको पुकारा। रूपरानी ने बुर्ज की दीवार के पास आकर उससे बात भी की।

उसके बाद राजकुमार शिकार के बहाने प्रायः उस तरफ़ आया करता। दोनों की जान पहिचान जल्दी ही प्रेम में परिवर्तित हो गई। रूपरानी ने एक रस्सी नीचे लटका दी। उसकी सहायता से राजकुमार ऊपर चला गया।

उन दोनों का देखकर आया उनके गान्धर्व विवाह पर आपत्ति न कर सकी। राजकुमार अक्सर आता, दो तीन दिन रूपरानी के साथ रहता और उस अंगूठी और तमगा देकर चला जाता।

कुछ समय बाद रूपरानी गर्भवती हुई। पर रूपरानी अपने गुप्त विवाह के बारे में अपने पिता से न कह पायी।

इस प्रकार राजकुमार भी अपने गुप्त विवाह के बारे में अपने पिता से न कह पाया। चूँकि राजा, अपने लड़के का विवाह किसी बड़ी राजकुमारी से करना

चाहता था। उसने इस कारण कई छोटी मोटी राजकुमारियों के सम्बन्ध ठुकरा भी दिये थे। राजकुमार जानता था कि उस हालत में, उसका पिता एक साधारण कुटुम्ब की लड़की को अपनी बहू के रूप में नहीं स्वीकार करेगा।

कालक्रम से रूपरानी ने एक लड़के को जन्म दिया। इस कारण एक और समस्या पैदा हो गई। यदि उस लड़के को जल्दी से, जल्दी कहीं भेज न दिया गया, तो रहस्य को रखना असम्भव था। क्योंकि हफ्ताह दस दिन में, रूपरानी का पिता आता और नीचे से ही अपनी लड़की और उसकी आया से बात करके चला जाता। उसके आने पर अगर बच्चा रो पड़ता, तो रहस्य भी खुल जाता।

इसलिए रूपरानी और आया ने मिलकर उस बच्चे को बाहर ले जाने का तरीका सोचा। उस दिन शाम को रस्सी के सहारे आया नीचे गई और फूलों के बागों में जाकर टोकरे-भर फूल ले आयी। रूपरानी ने बच्चे को पेट-भर के दूध पिलाया और उसे सुला दिया। फूलों के टोकरे में लिटाकर, राजकुमार ने जो जो उपहार उसे दिये थे, उन्हें उसमें रखकर, ऊपर से उस पर फूल ढ़क दिये।

आया उस टोकरे को लेकर, सीधे राजमहल गई। वहाँ दासियों से उसने कहा—"मैं रानी के लिए फूल लायी हूँ। दो वराह लेकर, उनको लेने के लिए कहिये।"

यह जानते ही कि दो वराह में टोकरा भर फूल आ रहे थे रानी ने दासियों को दो वराह देकर टोकरा मंगा लिया। जब उसने जल्दी जल्दी ऊपर के फूल उठाये, तो नीचे बच्चा आराम से सोता दिखाई दिया। देखने में वह कुलीन

मालूम होता था, राजा ने भी जब देखा तो उसने कहा—"कितना अच्छा है।"

जब दासियों को फूल लानेवाली के लिए भेजा गया, तो वह तब तक जा चुकी थी। इसलिए यह न जाना जा सका कि वह किसका लड़का था। लड़के के साथ रूपरानी ने जो अंगूठियाँ, तमगे आदि रखे थे, वे दिखाई दिये।

"यह जरूर बड़ों का लड़का है। इसे और कोई नहीं पाल सकता। हम ही पालेंगे।" राजा ने कहा। शायद रक्त सम्बन्ध के कारण रानी के मन में भी ऐसी ही इच्छा पैदा हुई।

राजकुमार लड़के के साथ अपनी चीज़ों को देखकर जान गया कि वह उसका ही लड़का था। पर ऊपर से यह बात किसी से कैसे कहे? चूँकि उसके माँ बाप उसे पाल रहे थे इसलिए बाद में भी यह बात बताई जा सकती है, उसने सोचा।

सब ठीक था। पर शायद चूँकि माँ आस पास न थी, वह लड़का हमेशा रोया करता। उसे शान्त करना किसी के बस की बात न थी। रो रोकर वह सो जाता। फिर उठकर रोने लगता।

"बिना लोरियाँ सुने, वह रोना नहीं छोड़ेगा। आकर लोरियों सुनाओ।" राजमहल की स्त्रियों को राजा ने आज्ञा दी। सब ने लोरियाँ गाईं, पर किसी की लोरी सुनकर भी उसने रोना बन्द न किया।

राजा ने नगर के स्त्रियों में ढ़ोल पिटवा दिया कि वे उसके द्वारा पाले जानेवाले लड़के के पास आकर सब स्त्रियाँ लोरियाँ गायें। सैकड़ों स्त्रियों ने आकर लोरियाँ गाईं "पर बच्चे का रोना कोई भी बन्द न कर सका। क्या और स्त्रियाँ नगर में नहीं हैं?" राजा ने पूछा।

लड़की ने आकर हमारे लड़के के लिए लोरी नहीं गायी। क्या बात है?" राजा ने उससे पूछा।

"महाराज! मेरी लड़की की अभी शादी नहीं हुई है। वह भला लोरियाँ कैसे जानेगी?" रूपरानी के पिता ने कहा।

"तुम्हें इससे क्या मतलब? गाना आये या न आये, सबको आकर गाना ही पड़ेगा। यह मेरी आज्ञा है।" राजा ने कहा।

रूपरानी का पिता जाकर अपनी लड़की को लाया।

"लड़का रो रहा है। शायद तुम्हारे लोरी गाने से वह रोना बन्द कर दे? जरा गाओ तो।" राजा ने कहा।

रूपरानी ने एक गीत गाया, जिसका मतलब यह था।

बेटे, मेरे नन्हें बेटे रो मत
तेरी माँ सचमुच अभागिन है।
बदनामी के डर से उसने तुमको बेच दिया।
तेरा गुणशाली पिता तेरी रक्षा करे,
तेरा दादा महाराजा तुम्हें पाले पोसे
तेरी माँ ही अभागिन है
रो मत, रो मत, मेरे नन्हें बेटे।

"नगर के बाहर एक स्तम्भ के मकान में कोई स्त्री है, सिवाय उस लड़की के बाकी सब स्त्रियाँ आ चुकी हैं।" सैनिकों ने कहा।

"जब और आई हैं, तो वह क्यों नहीं आयी?" राजा ने पूछा।

"उसका पिता उसे वहाँ से उतरने नहीं देता।" सैनिकों ने कहा।

"उस पिता को पकड़कर लाओ।" राजा ने कहा। रूपरानी के पिता को सैनिक ले आये।

"जब हमने यह घोषणा निकलवायी थी कि सब स्त्रियाँ आयें, केवल तुम्हारी

रूपरानी का हाथ लगना था और उसका गाना सुनने की देर थी कि लड़के ने तुरत रोना बन्द कर दिया। और वह अभी गा ही रही थी कि वह सो भी गया।

राजा ने रूपरानी के पास आकर पूछा—"तुम ही इस लड़के की माँ हो, इसमें कोई सन्देह नहीं है। अपने लड़के को तुमने क्यों बेच दिया?"

रूपरानी ने सिर नीचा कर लिया। वह बोली नहीं।

राजा ने इस बार प्रेम से पूछा। "सच बताओ बेटी। तुम्हें क्या डर है? तुम पर आँच नहीं आने दूँगा। इस लड़के का पिता कौन है?"

रूपरानी ने सिर उठाकर राजकुमार की ओर देखा और फिर सिर नीचे कर लिया।

तब राजकुमार ने राजा को सच बताकर क्षमा माँगी।

रूपरानी भी रोती रोती पिता के पैरों पर पड़ी। पिता ने रूपरानी को उठाकर कहा—"बेटी, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। ऐसी गुज़रेगी, तुम्हारे पैदा होने से पहिले ही एक बड़े सिद्ध ने बताया था। मैंने उसकी बात गलत साबित करनी चाही। हर तरह से कोशिश की। पर जो लिखा है, उसे मैं मिटा न सका।"

राजा ने उसकी बताई हुई सारी बात सुनी। अपने लड़के का अपराध क्षमा करके, उसे अपनी बहू के रूप में स्वीकार किया। उसने अपने लड़के की शादी, और पोते का नामकरणोत्सव एक ही साथ बड़े वैभव के साथ मनाया।

गुम हुई गौव्वें

एक पर्वत प्रान्त में राम नाम का एक अनाथ लड़का था। वह काम के लिए गाँव गाँव फिरा करता। पहाड़ पर चढ़कर उतरकर जब वह एक गाँव जा रहा था, तो उसने एक किसान से काम माँगा।

"मैं तुम्हें काम पर रख दूँगा। हमारे पास दस गौव्वें हैं। उन्हें रोज जंगल ले जाकर, चराकर घर लाना। मैं तुम्हें एक साल का समय दूँगा। अगर इस बीच मेरी गौव्वें दुगनी हो गईं तो तुम्हारा मैं विवाह कर दूँगा। अगर ऐसा न हुआ तो मैं अभी नहीं बताऊँगा कि मैं क्या करूँगा।" किसान ने कहा।

किसान की शर्तें राम मान गया और उसके घर वह काम पर लग गया। वह रोज अपने मालिक की दस गौव्वें जंगल ले जाता और उन्हें चराकर घर वापिस ले जाता।

एक दिन जब राम जंगल में गौव्वें चरा रहा था, तो कोई लड़का वहाँ आया। राम के साथ पेड़ के नीचे बैठकर गप्पें मारने लगा। जब अन्धेरा होने लगा और राम गौव्वों का घर ले जाने लगा, तो उस लड़के ने कहा—"तुम्हें एक तमाशा दिखाता हूँ। देखो।" कहकर उसने कुछ छोटे छोटे रोड़े पत्थर इकट्ठे किये। फिर उसने ऐसा दिखाया, जैसे उन पर जादू कर दिया हो।

"क्यों ऐसा कर रहे हो?" रामने उससे पूछा।

"मैंने इन पत्थरों के ढ़ेर को जादू लगा दिया है। कल जब हम यहाँ आयेंगे, तो

वेणुगोपाल

यह ढ़ेर काजू की मिठाई का ढ़ेर हो जायेगा। देखते रहना।" दूसरे लड़के ने कहा।

राम ने उसकी बात नहीं सुनी। परन्तु जब वह अगले दिन वहाँ पहुँचा तो सचमुच वहाँ काजू की मिठाई का ढ़ेर था। जब राम वहाँ पहुँचा तो दूसरी तरफ़ से वह लड़का भी आया। "देखा मेरा जादू?" उसने मिठाई देख कर कहा—"मैंने कहा था न? आओ हम दोनों इसे खा जायें।" कहकर उसने मिठाई के दो हिस्से किये और एक हिस्सा राम को दे दिया। दोनों ने अपने अपने हिस्से खा लिये।

अभी राम अपने हिस्से की पूरी मिठाई खा नहीं पाया था कि उसे बेहोशी की नीन्द सी आने लगी।

वह दूसरा लड़का चोरों को गिरोह का था। उसने राम को जो मिठाई दी थी, उसमें बेहोशी की दवा मिलाई हुई थी। इसी कारण ही राम को इतनी गहरी नीन्द आ गई थी।

जब राम सो गया तो पेडों के पीछे से चार चोर आये। उन्होंने राम को

हिलाया डुलाया, वह बेहोशी की नीन्द सो रहा था।

चोरों ने दस गौव्वों के गलों में बन्धे पट्टे उतारकर उस लड़के को दिये। उन्होंने उनको नीचेवाली टहनी से लटका दिया। फिर गौव्वों को हाँकते वे और वह लड़का चले गये।

बहुत देर बाद राम को होश आया। पर वह आँखें खोल न सका। जब हवा में टहनी हिलती, तो उससे बँधे पट्टों के घुंघरू भी बजते। यह सोच कि गौ चर चरा रही थीं, वह फिर सो गया। जब

उसे पूरी तरह होश आया, तो अन्धेरा हो चुका था। उठकर देखा तो कहीं गौव्वें न थीं। बन्धे घूँघरुवाले पट्टों से ध्वनि यहाँ से आ रही थी।

राम, उन दस पट्टों को लेकर घर गया। उसने अपने मालिक से कहा—"गौव्वों को कोई ले गया।" उसने लम्बा सा मुँह लटका दिया।

मालिक ने राम से कुछ भी नहीं कहा—"शान्ता" उसने अपनी लड़की को बुलाया। इसको भी बाकी नौ में मिला देंगे।" राम बड़ा खुश था कि उसका मालिक उस पर नाखुश नहीं हुआ था।

अगले दिन सवेरे मालिक ने राम को बुलाकर, उसे एक बोरा देकर कहा—"तुम जंगल जाकर इस बोरे में कीकर के काँटे तोड़ लाओ और एक गठ्ठर इमली की टहनियाँ भी, दोनों लाओ।"

राम जंगल गया। बोरे में उसने कीकर के काँटे डाल लिये और बगल में इमली की टहनियाँ रखकर घर की ओर निकला। रास्ते में उसे मालिक की लड़की शान्ता मिली। "तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम नहीं जान सके कि इन्हें मेरे पिता ने क्यों लाने के लिए कहा था? तुम्हें कीकर के काँटों पर लिटाकर इमली की टहनी से मारने के लिए। उन्हें फेंक कहीं भाग जाओ। मेरे पिता नौ आदमियों को पहिले इस तरह का दण्ड दे चुके हैं। हमारे पास सौ गौव्वें थीं। दस दस करके चोर सब ले गये। हम अपनी गौव्वों को "भाग्य लक्ष्मी" कहकर पुकारते थे। उस नाम से ही वे आया जाया करतीं। यदि तुम मेरे पिता को

खुश करना चाहते हो, तो हमारी सौ गौव्वों को ढूँढ़ लाओ और हमारे पिताजी के सामने आओ। नहीं तो इस तरफ़ मत आना।"

राम अक़्‌मन्द था। उसने गौव्वों को चराने का काम करने का सोचा। पर उसने ऐसे आदमी के पास काम न करना चाहा, जिसके पास सौ गौव्वें न हों। जब वह ऐसे आदमी को खोजता खोजता निकला, तो दूर गाँव में एक के पास दो सौ गौव्वें थीं। राम उसके पास गया और उससे उसने गौव्वें चराने का काम माँगा।

"तुम ठीक समय पर आये हो। मुझे गौव्वें चराने के लिए आदमी चाहिए। अगर तुम मेरी शर्तें मानते हो, काम पर आओ, वरना अपना रास्ता पकड़ो। मैं तुम्हें तीन महीने ही काम पर रखूँगा। तुम्हें अलग से कोई वेतन नहीं दूँगा। तीन महीने बाद, जो गौव्वें तुम्हारे पास आयेंगी, उन्हें ही तुम्हें दे दूँगा। वह ही तुम्हारा वेतन होगा।"

यह आदमी चोरों के साथ भाव सौदा किया करता था। चोर, सस्ते में जो

गौव्वें बेचते, वह उन्हें खरीद लेता। इसी तरह ही उसने दो सौ गौव्वें खरीदी थीं।

राम जान गया कि वे सब गौव्वें वे ही थीं, जिन्हें उसका पुराना मालिक खो बैठा था। उसने जैसे तैसे तीन महीने बिता दिये। एक दिन गौव्वों के मालिक ने उसे बुलाकर कहा—"आज तुम्हारा समय खतम हो गया है। कल जब तुम जा रहे हो, तो जो गौव्वें तुम्हारे बुलाने पर आयें, तो उनको साथ ले जाना।"

अगले दिन सवेरे राम गाँव में गया। दो तीन बड़े बुजुर्गों को अपने मालिक के पास बुला लाया।

"इन सबको क्यों बुलाकर लाये हो?" मालिक ने पूछा।

"यूँ ही मान लीजिये कोई गौ मेरे बुलाने पर आ गई, आप मुझे अपने साथ ले जाने देंगे। परन्तु ये बड़े बुजुर्ग यह सोचकर मुझे रोक सकते हैं कि मैं गौ चुराकर ले जा रहा हूँ। जो कुछ वेतन मेरा बनता है, इन सबके होते हुए ले जाना ही अच्छा है।" उसने कहा।

"तो बुलाओ गौव्वों को। देखें तुम्हारे साथ कौन-सी गौ आती है।" मालिक ने खिझकर कहा।

राम गौव्वों के पास गया। "भाग्य लक्ष्मी, भाग्य लक्ष्मी" कहकर उसने उनको बुलाया। तुरत सौ गौव्वें उसकी ओर भागते आयीं। उन्होंने राम को घेर लिया। बड़ों के देखते ही राम ने बड़े बुजुर्गों से, मालिक से विदा ली और वह उन्हें हाँककर पुराने मालिक के पास गया। "यह लीजिये। मैं आपकी दस गौव्वों का झुण्ड सौ गौव्वोंवाला बनाकर ले आया हूँ।"

शान्ता तुरत भागी भागी गई और घूँघरूवाले पट्टे लाकर उनके गले में उसने डाल दिये।

शान्ता के पिता ने कुछ न कहा। उसने गाँव के पुरोहित को बुलवाया और अच्छे मुहूर्त में शान्ता की राम से शादी कर दी और दामाद को अपने घर ही रख लिया।

कृष्णावतार

बलराम, गोकुल से मथुरा आकर सीधे कृष्ण के घर गया। कृष्ण ने उसके पाँव छुये। उसका स्वागत किया। फिर दोनों भाई वसुदेव के घर गये। वसुदेव ने बलराम को गले लगाकर, गोकुल के बारे में पूछा ताछा। बलराम ने गोकुल में जो एक बड़ा काम किया था, उसके बारे में बताया।

एक बार जहाँ वह बैठा था, उस जगह उसने कालिन्दी नदी को आने के लिए कहा। और उसे निहालने का आदेश दिया। कालिन्दी नदी आयी नहीं। बलराम को गुस्सा आ गया। उसने अपना हल कालिन्दी के गले में डालकर खींचा। इस तरह बृन्दावन तक कालिन्दी की एक नहर बन गई। और उससे गोपालकों का कल्याण हुआ।

कुछ समय बीता। एक दिन कृष्ण ने यादवों की सभा में इस प्रकार कहा :–

"हमारी मथुरा की तरह इस संसार में कोई दूसरा नगर नहीं है। इस प्रकार का क्षेत्र भी अन्यत्र नहीं है। भले ही हम कहीं और पाले गये हों, पर हम पैदा यहीं हुए थे। यहाँ वापिस आकर हमने सब ऐश्वर्य और वैभव प्राप्त कर लिये हैं। पर हमें यहाँ शत्रुओं से अधिक भय होने लगा है। संसार के सब राजाओं ने जरासन्ध के नेतृत्व में आकर कैसे हम

१५. द्वारका का निर्माण

पर आक्रमण किया था, आप सब जानते हैं। अभी यह खतरा खतम नहीं हुआ है। हमारे पास बल है। हाथी, घोड़े और रथ हैं। हमारे पास सोना और रत्न आदि हैं। परन्तु क्या लाभ? जब जब शत्रु आक्रमण करते हैं, तब तब हमारी हानि होती है। ऐसा होते रहना अच्छा नहीं है। इसलिए यहाँ से चले जाना मुझे अधिक उपयुक्त मालूम होता है। हम कहीं और जाकर बस जायेंगे। वहाँ जाकर आराम से रहेंगे।"

कृष्ण की बातें यादवों को जंचीं। जरासन्ध को मारना सम्भव न था। उसके पीछे अनन्त सेना थी। युद्ध किया जा सकता है, पर वह युद्ध कभी खतम नहीं होगा। और होगा यह कि दोनों पक्षों का सर्वनाश हो जायेगा। यादवों ने सोचा कि यदि कृष्ण ने कोई सुरक्षित जगह दिखाई तो वहाँ जा बसना ही अच्छा है।

कृष्ण ने कहाँ यादवों को ले जाना था, मन में निश्चित करके उनसे यात्रा के लिए तैयार होने को कहा।

उसी समय पता चला कि कालयवन मथुरा पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा था और जरासन्ध भी इसी प्रयत्न में था। यह सुनते ही कृष्ण ने कहा– "चलो, आज ही हम निकल पड़ें। आज का दिन बड़ा अच्छा है।"

वासुदेव, उग्रसेन, बलराम, कृष्ण उनके साथ अन्धक वीर और उनके परिवार, असंख्य हाथी, रथ, घोड़े और अपनी सारी सम्पत्ति साथ लेकर, मथुरा छोड़कर पश्चिम दिशा की ओर निकल पड़े। वे चलते चलते पश्चिमी समुद्र तट पर पहुँचे।

वह प्रदेश बाग बगीचों से भरा था। उसी जगह कभी एकलव्य ने द्रोणाचार्य की पूजा की थी।

कहाँ घर बनाये जाने चाहिए थे और कहाँ बाग बाग लगाने थे, कहाँ पानी का अच्छा प्रबन्ध था, इन सब बातों को सोचकर उन्होंने वहाँ एक सुन्दर नगर बनाया। उसका नाम द्वारवती रखा। नगर में सब के अच्छे अच्छे घर थे। यादओं में शत्रुओं का भय जाता रहा। वे सुख से निश्चिन्त होकर द्वारवती में रहने लगे। पर द्वारवती के निर्माण के पहिले बहुत कुछ हुआ।

कृष्ण, जो कभी किसी शत्रु से नहीं डरा था, अगर वह कालयवन से बिना लड़े, मथुरा छोड़कर पश्चिमी समुद्र के तट पर नगर बनाने चला आया था, तो इसके पीछे कारण था। वह भी एक छोटी-सी कहानी है।

कभी वृष्णि और अन्धक परिवारों के लिए गर्ग नाम का एक गुरु था। उसने आजन्म ब्रह्मचर्य रखने का व्रत किया। गर्ग, जब यादवों के बीच थे, तो किसी ने उसका परिहास किया कि वह पुरुष नहीं स्त्री था। यादवों ने यह बात सुनकर कुछ नहीं किया। उन्होंने कोई आपत्ति नहीं उठाई।

गर्ग को बड़ा गुस्सा आया। वह जंगल में गया। बारह साल तक लोह चूर्ण खाते खाते तपस्या की। उसका शिव से साक्षात्कार हुआ। उसने उससे वर पाया कि उसके एक ऐसा पुत्र हो, जो वृष्णि और अन्धकों को तंग कर सके। यह जानकर, निस्सन्तान यवनेश्वर उसे बुला ले गया। उसके रहने के लिए उसने अपनी गौव्वों के बीच मे व्यवस्था कर दी।

गर्ग, जब गौव्वों के साथ रह रहा था, तो एक अप्सरा, गोपिका के रूप में वहाँ आयी। ईश्वरादेश के अनुसार वह गर्भवती हुई और उसने कालयवन को जन्म दिया। उस लड़के को यवन राजा ने अपने लड़के की तरह पाला पोसा। कालयवन बड़ा तेजवान, बुद्धिमान और बलवान बना। वह किसी की भी परवाह न करता।

एक बार यवन राजा के पास नारद आया। तब कालयवन ने उससे पूछा कि संसार में सब से बड़ा वीर कौन है?

"इस समय यादवों से बढ़कर कोई वीर नहीं है।" नारद ने उनका खूब बढ़ा चढ़ाकर वर्णन किया। नारद की बातें सुन सुनकर कालयवन को ईर्ष्या हो उठी। शक वंश के राजा, हिमालय में रहनेवाले दस्यु, जैसा वह कहता वैसा करते थे। इसलिए उन सबको मिलाकर उसने एक सेना बनाई। हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट ये सब लेकर वह मथुरा पर आक्रमण करने निकल पड़ा।

यह बात कृष्ण ने नारद से ही सुनी थी। सब बातों पर सोच साचकर कृष्ण ने यही तय किया कि मथुरा छोड़कर चले जाना ही अच्छा था। यह निश्चय करते ही, उसने यादवों को सावधान भी कर दिया।

कृष्ण ने एक और काम भी किया। उसने एक घड़े में एक कालसर्प रखा, उस पर ढक्कन रखकर उसे एक दूत द्वारा कालयवन के पास, यह कहला कर भिजवाया कि इस घड़े के कालसर्प के समान है कृष्ण का बल।

यह सुनकर कालयवन ने कुछ भी न कहा। कालसर्पवाले घड़े में चीटियाँ

SANKAR
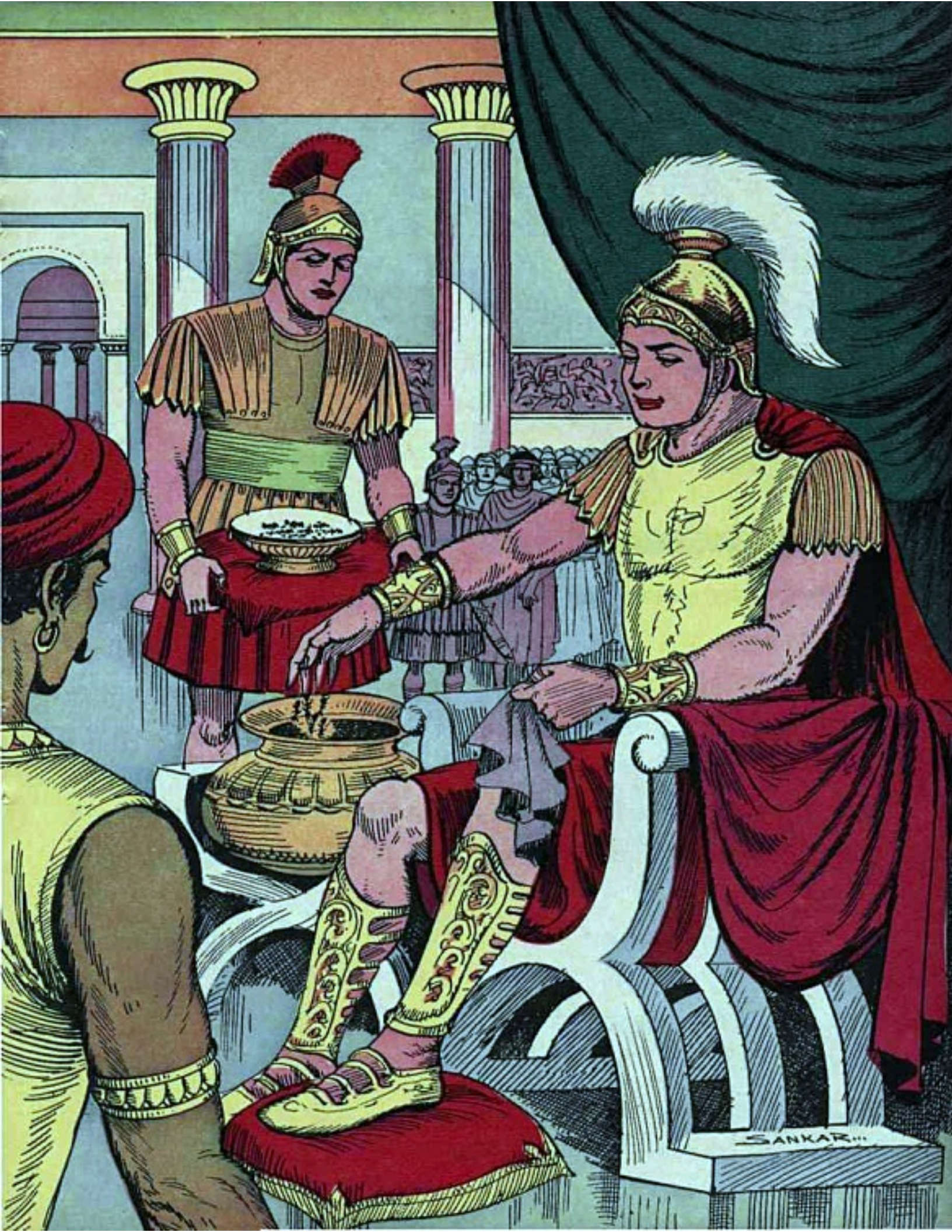
डालकर, उसपर ढक्कन डालकर कृष्ण के पास भिजवाया, और यह सन्देश भेजा– "भले ही तुम शक्तिशाली हो, पर बहुत-से लोगों के बीच में फँस जाने पर तुम्हारी शक्ति किसी काम की नहीं है।" कृष्ण ने उस सन्देश का रहस्य समझ लिया। वह मथुरा नगर छोड़कर यादवों के साथ निकल पड़ा।

वह द्वारवती से, बिना कोई अस्त्र शस्त्र लिये, पैदल अपने शत्रु के नगर में पहुँचा। वहाँ के लोगों ने कृष्ण को पहिचान लिया। "घेर लो, पकड़ लो।" वे चिल्लाये।

इस बीच कालयवन ने कृष्ण के आने के बारे में सुना। वह भी निरायुध हो, पैदल कृष्ण का सामना करने आया। परन्तु कृष्ण ने इस प्रकार दिखाया, जैसे उससे हाथ मिलाने जा रहा हो, पर हाथ बिना हिलाये, वह बड़ी तेज़ी से एक गुफ़ा में चला गया।

उस गुफा में मुचिकन्द सो रहा था। वह मान्धाता का लड़का था। देवासुर युद्ध में वह खूब लड़ा था। उसी के कारण देवताओं की विजय हुई थी। थकान उतारने के लिए वह जब सोने आ गया तो उसने यह वर भी पाया कि जो कोई उसकी निद्रा भंग करेगा, वह उसको अपनी दृष्टि से ही भस्म कर सकेगा। यह बात कृष्ण जानता था। इसलिए वह उसके सिरहाने छुप गया।

उसके पीछे पीछे कालयवन भी गुफा में आया। सोते हुए मुचिकन्द को देखकर उसने सोचा कि वह ही कृष्ण था। उसने उसे लात मारकर कहा–"यूँ मौत से बचना चाहते थे। उठो, उठो, पता लग गया कि तुम्हारी शक्ति कितनी है।" उसने जोर से अट्टहास किया।

मुचिकन्द की नीन्द टूटी। वह उठ बैठा। उसने गुस्से में घूरकर कालयवन की ओर देखा। तुरत कालयवन पर बिजली-सी गिरी। वह खड़ा खड़ा राख हो गया।

फिर कृष्ण, आराम से मुचिकन्द के सामने आया। "मुझे नारद ने बताया था कि तुम यहाँ हो। मेरा काम भी तुम्हारे द्वारा हो गया, सन्तुष्ट हूँ। अब मैं जा रहा हूँ।"

मुचिकन्द ने कृष्ण को देखकर पूछा—"आप कौन है? यहाँ किस काम पर आये हैं। यह व्यक्ति कौन था, जिसने मेरी नीन्द भंग की थी? मैं यहाँ कब से सो रहा हूँ? अगर आपको मालूम हो, तो बताइये।"

तब कृष्ण ने यूँ बताया :

"चन्द्र की तरह नहुष भी था, उसका लड़का था, ययाति। ययाति के पाँच लड़के थे। उन सब में बड़ा था, भद्र। उस भद्र वंश में वसुदेव नाम का महापुरुष पैदा हुआ। उसकी पत्नी थी देवकी... मैं उन्हीं का लड़का हूँ। उनकी एक और पत्नी थी रोहिणी, उसका लड़का है, बलराम, मैं उसका भाई हूँ। मुझे वासुदेव कहते हैं। और जो तुम्हारी कोपाग्नि में आहुति हो गया है, वह प्रसिद्ध कालयवन है। वर के कारण वह पैदा हुआ और एक और तरह मारा गया। वह मेरा शत्रु था। सुना है कि तुम त्रेतायुग में पैदा हुए थे और अब कलियुग आनेवाला है।"

गुफा से बाहर आकर मुचिकन्द ने फिर राज्य करना चाहा। पर भूमि पर अल्प बुद्धि, अल्प पराक्रमी, छोटे मोटे लोगों को देखकर उसकी यह इच्छा जाती रही।

इसलिए वह तपस्या करने के लिए हिमालय चला गया।

प्रबल शत्रु के मार दिये जाने के बाद कृष्ण ने कालयवन की सेना के प्रधान वीरों को अपने दिव्य अस्त्रों से मार दिया। बाकी सेना को अपने वश में कर लिया और तेज़ी से जाकर अपने लोगों में जा मिला। यह सुनकर यादव लोग बड़े खुश हुए। इतना सब होने के बाद द्वारवती नगर का निर्माण हुआ।

द्वारवती के निर्माण के लिए कृष्ण ने विश्वकर्मा की सहायता लेनी चाही। उसने उसको याद किया। तुरत वह प्रत्यक्ष हुआ। "मुझे क्यों याद किया है? मुझसे क्या काम है?"

"स्वर्ग में इन्द्र का नगर जिस प्रकार है, उसी प्रकार भूलोक में, सब से अधिक सुन्दर एक नगर मेरे लिए बनाकर दो।" कृष्ण ने कहा।

"अगर इन सब लोगों के लिए आवश्यक घर बनवाने हैं, तो यह प्रदेश पर्याप्त नहीं है। यदि समुद्र कुछ पीछे हट गया, तो एक विशाल नगर यहाँ बनाया जा सकता है।" विश्वकर्मा ने कहा।

कृष्ण ने समुद्र से प्रार्थना की। समुद्र प्रत्यक्ष हुआ। वह जिधर देखो उधर, बारह योजन भूमि छोड़कर पीछे हट गया। तब वहाँ विश्वकर्मा ने भव्य नगर बनाया। सोने का किला, गगन चुम्बी मणि गोपुर, ऊँचे महल, भवन, सुन्दर राजमार्ग, चैत्य, तौरण, जलाशय, क्रित्रिम शिलोद्यान बनवाये। राजभवन में उच्च, आसन पर कृष्ण बैठा, यादव प्रमुख उसके सामने आसीन थे। कृष्ण ने विश्वकर्मा का उचित सत्कार किया और उसको इन्द्रलोक भेज दिया।

[१८]

काबा से भालू ने कहा—"शिकार करना है।" जंगल में जानवर एक दूसरे से इसी प्रकार अभिवादन करते हैं।

"ओहो भालू? शिकार करना है बघेल, जानते हो जब मैं पिछली बार शिकार कर रहा था, तो क्या हुआ? गिरते गिरते बचा। टहनी से, मेरा शरीर खिसकने लगा। खिसकने की आवाज़ सुन बन्दर जाग उठे और उन्होंने मुझे वे गालियाँ दीं कि कुछ न पूछो।" काबा ने कहा।

"बिना पैर के हरा कीड़ा कहा था क्या?" बघेल ने इस तरह कहा, जैसे कुछ याद कर रहा हो।

"हाँ, हाँ, बन्दरों ने मुझे वह भी कहा? भुस...." काबा गुस्से में भुसभुसाया।

"जो मन में आता है, वह बकते हैं ये बन्दर। कहते हैं कि तुम्हारे सब दान्त उखड़ गये हैं? तुम सिवाय छोटे छोटे मेमनों के, किसी और जन्तु का शिकार नहीं कर सकते। उनकी जबान पर कोई लगाम वगाम तो है नहीं?" बघेल ने कहा।

काबा बड़ी उम्र का साँप था। बड़ी उम्र के साँपों को जब गुस्सा आता है, तो ऊपर कुछ नहीं दिखाई देता। परन्तु उसको इधर उधर बल खाता देख, बघेल जान गया कि उसे गुस्सा आ गया था।

"बन्दरों ने अपने रहने की जगह बदल दी है। अभी जब मैं धूप में आया था, तो दूर ही टहनियों पर

मैंने उनकी आहट सुनी थी।" काबा ने कहा।

"हम बन्दरों का ही शिकार कर रहे हैं।" भालू ने कहा।

"तुम जैसे महायोद्धा यदि बन्दरों के पीछे पड़े हैं, तो अवश्य इसका कोई कारण होगा।" काबा ने कहा।

बघेल ने साफ साफ कहा—"भाई काबा, असली बात तो यह है कि ये फल खानेवाले, किच किच करनेवाले बन्दर हमारे मनुष्य के लड़के को उठा ले गये हैं। तुमने उसके बारे में सुन ही रखा होगा।"

"हाँ, सुना तो था कि एक आदमी का बच्चा भेड़ियों के झुन्ड में शामिल हो गया था। पर विश्वास नहीं हुआ था।" काबा ने कहा।

"यह बात सच है कि हमें उस जैसा लड़का कहीं नहीं मिलेगा। उसमें क्या अक्ल है! क्या बहादुरी है! उससे मुझे कितनी कीर्ति मिलनेवाली है। हम उस पर जान देते हैं।" भालू ने कहा।

"प्रेम किसे कहते हैं यह मैं जानता हूँ, तुम्हें इसके बारे में कितनी ही कहानियाँ सुना सकता हूँ।" काबा कह ही रहा था कि बघेल ने कहा—"पेट भरने के बाद रात-भर गप्प मारेंगे। इस समय हमारा लड़का, बन्दरों के यहाँ फंसा हुआ है। जंगल में हर कोई जानता है कि काबा का नाम सुनते ही बन्दर थर थर काँप उठते हैं।"

"उन्हें मुझसे डर है। मूर्ख कहीं के। बातूनी कहीं के, उन्होंने ही तो मुझे हरी मछली कहा था।" काबा ने कहा।

"मछली नहीं, कीड़ा। एक बात कहीं हो, तो बताऊँ भी, न मालूम क्या क्या बका करते हैं। तुम्हारे बारे में वह

सब कैसे बताऊँ, यह भी मुझे नहीं सूझ रहा है।"

"भुस, तो उनकी खबर लेनी होगी। लड़के को लेकर वे किस तरफ़ गये हैं?" काबा ने पूछा।

"सूर्यास्त की ओर शायद गये हैं। हमने सोचा था कि शायद तुम ही उसके बारे में जानते होगे।" भालू ने कहा।

"मुझे? भला कैसे मालूम होगा? मैं बन्दर, मेंढ़क आदि का शिकार नहीं करता। अगर मेरे पास वे आते हैं, तो मैं उनको पकड़ लेता हूँ।" काबा ने कहा।

इतने में आकाश में से आवाज़ आई—"भालू, इधर देखो, ऊपर....". यह गिद्ध की आवाज़ थी। वह भालू के लिए सारे जंगल में छान रहा था। उसने कहा—"मैंने मौवली को बन्दरों के साथ देखा है। उसने तुम्हें अपने बारे में कहने के लिए कहा है। वानर नदी पार करके, उसे वानर नगर ले गये हैं। जहाँ वे खण्डहर हैं न वहाँ। मैंने कहा कि रात-भर वहाँ चमगादड़ देखते रहना। नीचे, तुम्हें भी शिकार करना है। अच्छा, तो नमस्ते।"

"अरे गिद्ध भाई, पेट-भर खाना चाहिए और जी भरकर नीन्द। इस बार जिस जन्तु का मैं शिकार करूँगा उसका सिर तुम्हारे लिए छोड़ दूँगा।" बघेल ने कहा।

"मैंने क्या कुछ किया है? उसने मेरी भाषा में मुझ से एक काम करने के लिए कहा। उसका करना मेरा धर्म है।" कहकर गिद्ध यकायक उड़ा और आकाश में मँडराने लगा।

"मौके पर उसको पक्षियों की भाषा याद रही। क्या अक्ल पाई है

उसने! वाह," भालू कहता फूला न समाया।

"ठुल्ले खोपड़ी में पैठ गये होंगे। चलो। अब हमें खण्डहरों के पास जाना होगा।" बघेल ने कहा।

तीनों जानते थे ये खण्डहर कहाँ थे।

"हम तुम्हारे लिए नहीं रुकेंगे? मैं और काबा जल्दी जल्दी जायेंगे। तुम पीछे पीछे आओ।" बघेल ने कहा।

"पैर हों या न हों, मैं तुम्हारे जितना तेज़ चल सकता हूँ।" काबा ने कहा।

भालू ने जल्दी जल्दी दो चार कदम आगे रखे। फिर हाँफकर गिर पड़ा। बाकी दोनों तेज़ी से आगे चलते गये। बघेल तेज़ी से छलाँगे मारता जा रहा था। और काबा भी उसके साथ चलता जाता था। रास्ते में जब एक नाला आया, तो बघेल उसे फान्द गया, चूँकि अजगर को तैरना पड़ गया था, इसलिए वह कुछ दूर पीछे रह गया।

"क्या समझा है तुमने काबा? तुम भी बहुत तेज़ चलते हो।" बघेल ने कहा।

"मैं भूखा जो हूँ, मुझे उन लोगों ने दागवाला मेंढ़क कहा था न?" काबा ने कहा।

"दागवाला मेंढ़क नहीं, हरा कीड़ा।" बघेल ने कहा।

"सब एक ही है, चलो।"

काबा की आँखें रास्ते पर गड़ी थीं। उसका शरीर रास्ते पर, पारे की तरह बहता-सा लगता था।

संसार के आश्चर्य:

७२. ओल्डवाय घाटी

पूर्वी अफ्रीका के टाजानिया देश में ओल्डवाय घाटी है। यहाँ पुरातत्व अन्वेषकों ने बीस लाख साल पहिले रहनेवाले मनुष्य के अवशेष और उसके द्वारा उपयुक्त पत्थर के औजार पाये हैं। इस घाटी में १००, २०० वर्ष तक खोज की जा सकती है।